श्री बाहुबली भगवान, श्री श्रवणबेलगोला जी

RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

श्री ऊर्जयंत गिरनारजी

वर्ष : 16	अंक : 3	मुम्बई, जून 2026	पृष्ठ : 32	मूल्य : ₹ 25	हिन्दी
VOLUME : 16	ISSUE : 3	MUMBAI, JUNE 2026	PAGES : 32	PRICE : ₹ 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

श्रुत स्कंध यंत्र, भेलुपुर, वाराणसी

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 16 अंक 3 जून 2026

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

संपादक

संपादकीय सलाहकार

डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली
डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद
डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

कार्यालय

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.

फोन :

E-mail : tirthvandana4@gmail.com

Website : tirthkshetracommittee.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210110008627 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

वीर निर्वाण संवत् 2552

इस अंक में

भोजशाला प्रकरण और जैन धर्म की स्वतंत्र अस्मिता : 6

साधु-सुरक्षा: समाज की संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का प्रश्न 7

आशापुरी (भोजपुर) की परमारकालीन जैन धरोहर संरक्षण की प्रतीक्षा में 9

श्रमण जैन परम्परा में चातुर्मास की अवधारणा 11

बाहरी दर्शनार्थियों के सहारे गिरनार जी की रक्षा नहीं हो सकती है- 20

जनगणना में जैन जागरण का नया सूत्र : 26

॥ जय जिनेन्द्र ॥

महत्वपूर्ण सूचना

जैन तीर्थ वन्दना के अनेकों पाठकों की भावनाओं एवं अनुरोधों को ध्यान में रखते हुए इसके प्रकाशन की अवधि अप्रैल 2026 से बढ़ाकर जून 2026 कर दी गई है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अनेक सदस्यों के वर्तमान पते में परिवर्तन होने अथवा उनकी सही जानकारी उपलब्ध न होने के कारण भेजी गई पत्रिकाएँ वापस आ रही हैं या पोस्ट किए जाने के बाद भी संबंधित सदस्यों को प्राप्त नहीं हो पा रही हैं।

अतः सभी पाठकों एवं सदस्यों से पुनः विनम्र अनुरोध है कि 10 मई 2026 तक अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नंबर तथा पहचान संबंधी जानकारी (आधार कार्ड / पैन कार्ड / वोटर आईडी नंबर) हमें उपलब्ध कराने की कृपा करें।

आपकी अद्यतन जानकारी प्राप्त होने पर जुलाई 2026 से पत्रिका डिजिटल माध्यम से आपको नियमित रूप से उपलब्ध कराई जा सकेगी, अन्यथा सही जानकारी के अभाव में आप पत्रिका प्राप्त करने से वंचित रह सकते हैं।

— भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।

2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।

3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

वर्षायोग में संघर्ष नहीं सेवा की छवि बनायें

इतिहास साक्षी है कि अतीत में सैकड़ों मन्दिरों पर बलात् कब्जे हुए हैं, उनके स्वरूप में परिवर्तन किया गया है अथवा उनको पूर्णतः नष्ट कर दिया गया है किन्तु उस अतीत को स्मरण करते रहने से कोई फायदा नहीं। अब तो हमे उनसे सीख लेकर अपने धर्मायतनों की रक्षा करनी है।

वर्षायोग/चातुर्मास धार्मिक विषयों पर चिन्तन/मनन एवं क्रियान्वयन का एक अवसर होता है। इन दिनों हमारे पूज्य आचार्य, उपाध्याय, मुनिगण एवं आर्यिका माताऐं एक स्थान पर विराजमान रहकर प्रशस्त चिन्तन करते एवं मार्गदर्शन देते हैं। श्रावक/श्राविकायें भी अपना अधिकांश समय संतों के श्री चरणों में बैठकर आत्मोन्नति हेतु धर्माराधन में व्यतीत करते हैं। ज्यादा समय मन्दिर जी में रहने से अनेक विषयों में विचार विमर्श करने के मध्य कई बार मतभेद ही नहीं मनभेद भी हो जाते हैं इससे हमारी समाज की छवि खराब होती है।

म.प्र., महाराष्ट्र, राजस्थान एवं गुजरात में संतों के विहार के मध्य सड़क दुर्घटनाऐं आजकल बढ़ गई हैं। कई बार ड्राइवरों द्वारा अकारण ही दुर्घटनायें कर दी जाती हैं। जिनसे बचा जा सकता है। पर्याप्त सावधानी बरतने के बाद भी यदि दुर्भाग्य से दुर्घटना हो जाती है तो वह मजबूरी है किन्तु यदि जानबूझकर कोई टक्कर मार दे तो यह घोर हिसंक, अमानवीय एवं दण्डनीय कृत्य है। इसमें ड्राइवर की मानसिकता, कुंठा भी एक कारण रहती है। ड्राइवर बंधुओं के मन में जैन संतों के प्रति आदर एवं सम्मान का भाव जगाने एवं जैन समाज को अपना शुभचिन्तक स्वीकार करने हेतु हमें वर्षायोग में समग्र समाज हेतु कुछ सेवा गतिविधियों को बढ़ाना होगा।

अतः मेरा सुझाव है कि वर्षायोग स्थलों पर बनी आधारभूत संरचना का उपयोग कर स्थानीय, शासकीय/निजी अस्पतालों के साथ मिलकर: -

1. स्वास्थ परीक्षण या निदान शिविरों का आयोजन किया जाये।
2. नेत्रपरीक्षण, योग शिविरों का आयोजन किया जाये।
3. मन्दिर परिसर में हरीतिमा बढ़ाने हेतु वृक्षारोपण षिविर आयोजित किये जाये।
4. कॉलोनी/मोहल्ले में निवासरत गरीब शाकाहारी परिवारों को शिक्षा सहायता कॉपी/बस्ते आदि उपलब्ध कराया जाये।
5. कॉलोनी/मोहल्ले/ग्राम में निवासियों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने की योजनाओं में सहयोग करें।

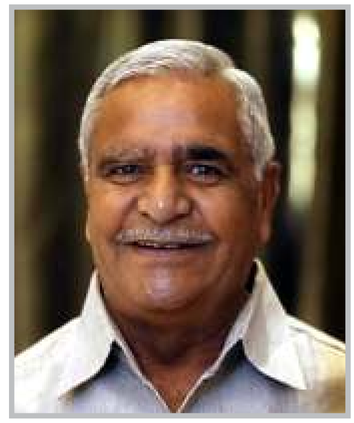

6. जल संचय या जलपुनर्भरण की योजना को तीर्थ पर संचालित करें।

इससे जैन समाज की सकारात्मक छवि बनाने एवं ड्राइवरों के मन में निरर्थक आक्रोश एवं विद्वेष जो कुछ जैनेतर बन्धु जैन समाज के प्रति रखते हैं, से निजात मिलेगी।

विगत दिनों सोशल मीडिया पर मैने पढ़ा कि, एक कॉलोनी में जैन परिवारों द्वारा साधु सन्तों के गोचरी अथवा आहार हेतु आने में भीषण गर्मी में पैर न जले अतः Apoxy Paint (सफेद रंग की पट्टी) रोड़ पर बनवा दी तो कॉलोनी के अन्य रहवासियों द्वारा आपत्ति व्यक्त करते हुए इसे धार्मिक उन्माद का कृत्य बताया गया। बाद में जैन समाज के बन्धुओं ने परस्पर चर्चा कर एवं शीघ्र ही इसे हटा लेने के वादे के साथ इस विषय को समाप्त किया। वैसे भी बारिश आ जाने पर Apoxy Paint का विषय अप्रासंगिक हो जायेगा। किन्तु इस प्रकार का कृत्य जैन समाज के बन्धुओं को अपने धार्मिक कृत्यों को करने में व्यवधान ही माना जायेगा। विगत 1-2 वर्ष पहले जैन मन्दिरों के सम्मुख एक नगर में मांसाहार के ठेले लगाना भी ऐसी ही प्रवृत्ति थी। आज हमें बहुसंख्यक समाज से उलझना नहीं अपितु अपने आचरण से उनके दिल में जगह बनाना होगी।

सेवा गतिविधियों के विस्तार से उन सबके मन में जैन संतों के प्रति आदर का भाव जगेगा एवं समाज के प्रति कृतज्ञता। इससे स्वाभाविक रूप से ऐसी परेशानियॉ कम होगी।

अतः मेरा अनुरोध है कि वर्षायोग में समग्र समाज के हित की सेवा गतिविधियॉ बढ़ाये। इससे हमारे तीर्थो के प्रति भी आदर एवं सम्मान बढ़ेगा।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्माननीय साधर्मी बंधुओं, भगनियों

सादर जय जिनेन्द्र।

इस माह के संदेश की शुरुआत अत्यंत भारी मन और गहरे दुःख के साथ कर रहा हूँ। हमारी संस्था 'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' के मुंबई कार्यालय का कार्यभार पिछले ५ दशक से भी अधिक समय तक पूरी निष्ठा, ईमानदारी और अद्वितीय समर्पण के साथ संभालने वाले हमारे आदरणीय प्रबंधक **श्री उमानाथ जी दुबे** अब हमारे बीच नहीं रहे। उनका आकस्मिक निधन तीर्थक्षेत्र कमेटी और संपूर्ण जैन समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

श्री दुबे जी ने अपने जीवन का एक लंबा कालखंड तीर्थों की निःस्वार्थ सेवा और कमेटी के प्रशासनिक कार्यों को सुचारू रूप से संचालित करने में समर्पित कर दिया। पीढ़ी दर पीढ़ी पदाधिकारियों के परिवर्तन के बाद भी, वे संस्था की एक सुदृढ़ रीढ़ बनकर मुंबई कार्यालय की समस्त व्यवस्थाओं को पूरी सहजता से संभालते रहे। उनका सौम्य व्यवहार, कार्य के प्रति अटूट निष्ठा और संस्था के प्रति उनका समर्पण सदैव अनुकरणीय रहेगा।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी परिवार उनके प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि और श्रद्धासुमन अर्पित करता है। हम सभी तीर्थंकर प्रभु के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति (उत्तम गति) प्रदान करें तथा उनके शोक संतप्त परिजनों को यह गहरा वज्रपात सहन करने की शक्ति दें। उनके द्वारा दी गई पांच दशकों से अधिक की दीर्घकालीन सेवाएं संस्था के इतिहास में सदैव अमर और वंदनीय रहेंगी।

ऐतिहासिक गौरव: शतकोत्तर रजत स्थापना (१२५ वर्ष) महोत्सव का पावन आह्वान

साधर्मी बंधुओं, हमारे लिए यह अत्यंत हर्ष, गौरव और सौभाग्य का विषय है कि हमारी सर्वोच्च और गौरवमयी संस्था अपने त्याग, तपस्या और समर्पण के **१२५ वर्ष (सवा सौ साल)** पूर्ण करने जा रही है। हम सभी इस ऐतिहासिक **"शतकोत्तर रजत स्थापना महोत्सव"** के भव्य शुभारम्भ की पावन बेला की ओर बढ़ रहे हैं।

इस ऐतिहासिक राष्ट्रीय महोत्सव का मंगल शुभारम्भ **२१-२२ अक्टूबर २०२६ को मथुरा (उत्तर प्रदेश) की पावन और ऐतिहासिक धरा से होने जा रहा है।** १२५ वर्षों की इस अनवरत यात्रा के वैभव को अक्षुण्ण रखने और आगामी स्वरूप की दूरगामी रूपरेखा तय करने के लिए यह महोत्सव मील का पत्थर साबित होगा।

मैं देश-विदेश में बसे समस्त दिगम्बर जैन समाज, समाजश्रेष्ठियों, दानदाताओं, युवाओं और स्थानीय दिगम्बर जैन संस्थाओं को इस भव्य शुभारम्भ समारोह में सम्मिलित होने के लिए भावभीना राष्ट्रीय आमंत्रण देता हूँ। आप सभी पूरे उत्साह के साथ मथुरा पधारकर इस ऐतिहासिक पल के साक्षी बनें और तीर्थभक्ति के इस महायज्ञ में अपनी सक्रिय सहभागिता दर्ज कराएं।

आगामी चातुर्मास और 'तीर्थरक्षा कलश' की पावन अपील

परम पूज्य आचार्यों, मुनिराजों, उपाध्यायों, ऐलकों, क्षुल्लकों एवं आर्यिका माताओं के पावन आशीर्वाद से देश के कोने-कोने में वर्षायोग (चातुर्मास) की मंगल तैयारियां आगामी माह में गति पकड़ने लगेंगी। शीघ्र ही देश भर में भव्य कलश स्थापना समारोह आयोजित होंगे। यह समय आत्म-साधना, संयम और धर्म प्रभावना का है। इस पावन अवसर पर मैं समस्त जैन समाज, चातुर्मास समितियों, अंचल प्रभारियों और समाज के सभी वरिष्ठ महानुभावों से विनम्र निवेदन है कि इस वर्ष जहां-जहां भी मुनि महाराज, आर्यिका माताएं एवं साधु-साध्वियों के संघ विराजमान हैं, वहां **चातुर्मास कलश स्थापना के साथ-साथ एक 'तीर्थरक्षा कलश' अनिवार्य रूप से स्थापित किया जाए।** इस 'तीर्थरक्षा कलश' की स्थापना से प्राप्त होने वाली सम्पूर्ण राशि सीधे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई को भिजवाई जाए।

इस राशि का उपयोग हमारे सुदूर, प्राचीन और संकटग्रस्त तीर्थों के संरक्षण, जीर्णोद्धार और कानूनी सुरक्षा के लिए पूरी पारदर्शिता के साथ किया जाएगा। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी पिछले १२५ वर्षों से निरंतर तीर्थों की सुरक्षा के लिए कटिबद्ध है, और इस महती कार्य में समाज का अटूट सहयोग तथा पूज्य गुरुजनों का आशीर्वाद परम आवश्यक है। चूंकि हमारे तीर्थ सुरक्षित रहेंगे, तभी हमारी संस्कृति सुरक्षित रहेगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रत्येक चातुर्मास समिति इस महती जिम्मेदारी को सहर्ष स्वीकार कर अपना सहयोग अवश्य प्रेषित करेगी।

संतोष जैन (पेंढारी)

राष्ट्रीय महामंत्री

धन एवं श्रम का तंत्र: सफलता का मंत्र

लौकिक जीवन में धन एवं श्रम दोनों का महत्व है। बिना धन के श्रमशील व्यक्ति येन-केन-प्रकारेण जीवन-यापन तो कर सकता है किन्तु बहुत अधिक व्ययसाध्य कार्यो को करना संभव नहीं होता। इसी प्रकार धनवान व्यक्ति भी यदि श्रमशील न हो, कुशल योजनाकार न हो तो धन क्रमश: क्षीण होता जाता है। नीतिकारों ने भी पैतृक धन या भाग्य के भरोसे रहने के बजाय पुरुषार्थी बनने की प्रेरणा दी है। संक्षिप्ततः किसी बड़े कार्य की सफलता के पीछे धन एवं पुरुषार्थ यानी श्रम दोनों का महत्व है। धन एवं श्रम का ठीक से विनियोजन करने से सफलता प्राप्त होती है।

वर्तमान में वर्षायोग की आहट यत्र-तत्र-सर्वत्र सुनाई देने लगी है। बड़े-बड़े समूहों में लोग, प्रसिद्ध संतों को वर्षायोग हेतु श्रीफल समर्पित करने जा रहे हैं।

यह अच्छी बात है श्रद्धा की अभिव्यक्ति है तथापि यह भी ध्यान रखने की जरूरत है कि संतों के विहार में भी हम सबका यथेष्ट योगदान हो।

संतों के विहार के मध्य वर्तमान में होने वाली हृदय विदारक घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में संतों के विहार के समय समाज या समाज द्वारा नियोजित युवाओं का होना अत्यन्त आवश्यक है। प्रमुख संतों का एक पक्ष है एक दूसरा पक्ष अपेक्षाकृत कम लोकप्रिय संतों का है। वे तपस्वी हैं, ज्ञानवान हैं किन्तु प्रवचनपटु नहीं है। उन्हें कोई अपने यहाँ बुलाना नहीं चाहता। जिनका अपना भक्तमंडल नहीं है तो उनको कोई बुलाने से पहले समाज 10 बार सोचता है कि चौका कौन लगायेगा? कितना व्यय होगा? कितनी आमदनी होगी? मन्दिर का नुकसान तो नहीं होगा? किन्तु यह विचार नहीं करते कि कितने युवाओं को प्रेरणा मिलेगी? कितने बच्चों को धर्म का ज्ञान होगा? कितने बच्चे संस्कारित होंगे? वस्तुतः आज बच्चों/किशोरों/युवाओं को संस्कारित करने की ज्यादा जरूरत है। हमारे श्रेष्ठिवर्ग द्वारा धन तो दिया जा सकता है किन्तु समय या श्रम देना संभव नहीं है। **पुलक जन चेतना मंच** ने इस क्षेत्र में अच्छा काम किया है वे ऐसे पूज्य संतों का वर्षायोग कराने की पहल करते हैं।

इन्दौर के युवा बन्धु **इंजी. प्रकाश छाबड़ा जी** ने बच्चों के संस्कार शिविरों को व्यापक स्तर पर आयोजित कर इस दिशा में मानदण्ड स्थापित किये हैं। करोड़ों के पैकेज को छोड़कर उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन बच्चों को संस्कारित करने एवं आधुनिक ढ़ंग से धार्मिक शिक्षण प्रदान करने में लगाया है। उन्होनें स्वयं का धन तो लगाया ही दूसरो से भी लगवाया किन्तु श्रम स्वयं किया फलतः उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। सफलता हेतु धन एवं श्रम दोनों जरूरी हैं।

आज प्रमुख संतों के आगमन के समय युवाओं की पूरी फौज रहती है। किन्तु हम उस युवा शक्ति का नियोजन नहीं कर पा रहे है। यदि युवा शक्ति का विधिवत् नियोजन किया जाये तो अच्छे परिणाम मिल सकते हैं। समाज की कमेटियों में भी वरिष्ठों/श्रेष्ठियों के साथ युवाओं को भी स्थान देना चाहिए। युवाओं से भी मेरा आग्रह है कि विनयशील एवं विनम्र बने, लड़कर लेने की प्रवृत्ति ठीक नहीं है। आप अपने आचरण एवं व्यवहार से वरिष्ठों/श्रेष्ठियों का दिल जीते, धैर्य रखें एक न एक दिन आपको अवसर जरूर मिलेगा।

एक और समस्या आज विकराल रूप लेती जा रही है वह है रोजगार की। आरक्षण के कारण जैन युवाओं के रोजगार के क्षेत्र में बहुत तकलीफ उठानी पड़ रही है। शासकीय सेवा में उनके अवसर बहुत घट गये है। ऐसे में स्वरोजगार का ही सहारा है। समाज को युवाओं को आत्मीयता से जोड़ने हेतु उनकी समस्याओं को भी समझना होगा। एतदर्थ

1. 12 हवीं तक की कक्षाओं मं पढ़ने वाले छात्रों हेतु शिक्षा सहयोग की व्यवस्था तथा छात्रवृत्ति की व्यवस्था करनी होगी।

2. B.A. / B.Com. / B.Sc. / B.B.A. / M.B.A. / B.Tech. / M.Tech. के छात्रों हेतु प्रत्यावर्तनीय/अप्रत्यावर्तनीय छात्रवृत्तियों की व्यवस्था करनी होगी।

3. प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु अल्पशुल्क पर कोचिंग की व्यवस्था करनी होगी।

4. जैन उद्योगपतियों को जैन युवाओं को रोजगार में प्राथमिकता देनी चाहिए। मैं मानता हूं कि अनेक युवा अच्छा प्रतिसाद नहीं दे पाते किन्तु मौका तो उन्हें भी मिलना चाहिए।

5. भविष्य में अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाये रखने हेतु शोध संस्थानों को गतिशील, बहुआयामी बनाकर रखना होगा। यदि हम शोध नहीं करेंगे तो समग्र समाज में हमारा योगदान विस्मृत कर दिया जायेगा। इस कार्य में दृष्टि सम्पन्न व्यक्तियों की जरूरत है। (वरिष्ठ एवं युवा दोनों)

किन्तु शोध संस्थानों का संचालन बिना धन के नहीं होता साथ ही केवल धन से ही कुछ नहीं होता। धन एवं श्रम दोनों मिलकर ही सफलता दिलाते है।

आगामी वर्षायोग में हम पुरुषार्थी युवाओं को भी धन सम्पन्न श्रेष्ठियों के साथ सम्मान दे तभी हम समाज का हित कर सकेगे।

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष के कार्यक्रमों के संयोजन में युवाओं, महिलाओं, पत्रकारों सभी को स्थान दिया गया है किन्तु संस्कृति संरक्षण हेतु नियोजित प्रकाशनों को भी प्राथमिकता से पूर्ण करना होगा। उनको भुला दिया तो सब समय के साथ उड़ जायेगा।

श्री उमानाथ दुबे जी के अचानक चले जाने से हम सबकी अपूरणीय क्षति हुई है। उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

भोजशाला प्रकरण और जैन धर्म की स्वतंत्र अस्मिता : संवैधानिक सम्मान एवं सांस्कृतिक न्याय की अपेक्षा

डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

भारत केवल भौगोलिक सीमाओं का राष्ट्र नहीं, बल्कि सहस्राब्दियों से विकसित होती आई विविध आध्यात्मिक परंपराओं, सांस्कृतिक धाराओं और ज्ञान-संस्कृतियों का विराट संगम है। इस पवित्र भूमि ने अनेक धर्मों, दर्शन परंपराओं और साधना-पद्धतियों को जन्म दिया, जिनमें जैन धर्म अपनी प्राचीनता, अहिंसा-दृष्टि, तपश्चर्या, आत्मानुशासन और सार्वभौमिक करुणा के कारण विशेष स्थान रखता है। जैन धर्म भारतीय आध्यात्मिक चेतना का केवल एक अंग नहीं, बल्कि स्वतंत्र दार्शनिक सत्ता एवं विशिष्ट सांस्कृतिक परंपरा का सशक्त प्रतीक है।

हाल ही में भोजशाला प्रकरण में आए न्यायालयीन निर्णय ने जैन समाज की धार्मिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक भावनाओं को गहराई से उद्वेलित किया है। यह विषय केवल किसी भवन, स्मारक या पुरातात्त्विक संरचना तक सीमित नहीं है, बल्कि भारत की उस बहुपरतीय सांस्कृतिक विरासत से जुड़ा है, जिसमें जैन ज्ञान-परंपरा, प्राकृत साहित्य, साधना-संस्कृति और आध्यात्मिक विमर्श का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भोजशाला भारतीय इतिहास का ऐसा संवेदनशील केंद्र रही है, जहाँ ज्ञान, संस्कृति और साधना की अनेक धाराएँ समय-समय पर प्रवाहित होती रही हैं। अतः उसके संबंध में होने वाला प्रत्येक निर्णय करोड़ों लोगों की ऐतिहासिक स्मृतियों और आस्थाओं को प्रभावित करता है।

भारतीय संविधान, न्यायपालिका तथा सर्वोच्च न्यायालय ने विभिन्न अवसरों पर जैन धर्म की स्वतंत्र धार्मिक पहचान को स्पष्ट और प्रामाणिक रूप से स्वीकार किया है। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा व्यक्त यह महत्वपूर्ण अभिमत—

“Jain religion is indisputably not a part of Hindu religion.”

भारतीय न्यायिक इतिहास में जैन धर्म की स्वतंत्र सत्ता की अत्यंत महत्वपूर्ण संवैधानिक स्वीकृति है। यह कथन केवल एक कानूनी टिप्पणी नहीं, बल्कि उस ऐतिहासिक सत्य की पुष्टि है कि जैन धर्म की अपनी स्वतंत्र तीर्थंकर परंपरा, आगमिक साहित्य, साधना-पद्धति, दार्शनिक दृष्टि और सांस्कृतिक आधार हैं।

जैन धर्म का सम्पूर्ण वैचारिक ढाँचा आत्मशुद्धि, अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह और करुणा जैसे सार्वकालिक सिद्धांतों पर आधारित है। प्राकृत भाषा में रचित जैन आगम भारतीय ज्ञान-विरासत के अमूल्य दस्तावेज हैं। जैनाचार्यों ने दर्शन, साहित्य, गणित, व्याकरण, कला, स्थापत्य, इतिहास और संस्कृति के क्षेत्र में जो अनुपम योगदान दिया है, वह भारतीय सभ्यता के स्वर्णिम अध्यायों में सदैव स्मरणीय रहेगा। देश के प्राचीन मंदिर, शिलालेख, प्रतिमाएँ, ग्रंथ-भंडार और तीर्थस्थल इस गौरवशाली परंपरा के साक्षी हैं।

ऐसी स्थिति में यदि किसी ऐतिहासिक अथवा सांस्कृतिक स्थल के संदर्भ में जैन समाज की परंपराओं, मान्यताओं और ऐतिहासिक उपस्थिति की उपेक्षा होती है, तो यह केवल एक समुदाय की भावना का प्रश्न नहीं रह जाता, बल्कि भारत की बहुलतावादी सांस्कृतिक आत्मा के प्रति भी संवेदनहीनता का विषय बन जाता है। इतिहास का न्यायपूर्ण मूल्यांकन तभी संभव है जब उसमें सभी परंपराओं की उपस्थिति को निष्पक्षता एवं प्रामाणिकता के साथ स्वीकार किया जाए।

केंद्र एवं राज्य सरकारों, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा संबंधित सांस्कृतिक संस्थाओं से यह अपेक्षा है कि वे देश की प्राचीन जैन धरोहरों, अभिलेखों, तीर्थस्थलों और सांस्कृतिक प्रतीकों के संरक्षण, शोध एवं प्रामाणिक प्रस्तुतीकरण के प्रति अधिक गंभीर और संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाएँ। साथ ही ऐसे सभी विषयों में जैन समाज के विद्वानों, इतिहासकारों, पुरातत्व विशेषज्ञों और प्रतिनिधियों की सहभागिता सुनिश्चित की जाए, ताकि ऐतिहासिक तथ्यों और धार्मिक परंपराओं का संतुलित, न्यायसंगत एवं प्रमाणाधारित अध्ययन संभव हो सके।

यह भी स्मरणीय है कि जैन समाज सदैव संविधान, न्यायपालिका और विधि-व्यवस्था के प्रति पूर्ण आस्था रखता आया है। समाज का उद्देश्य किसी प्रकार का विवाद उत्पन्न करना नहीं, बल्कि अपनी प्राचीन धार्मिक-सांस्कृतिक अस्मिता और विरासत के संरक्षण हेतु संवैधानिक एवं शांतिपूर्ण संवाद को सुदृढ़ करना है। भारतीय लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति भी इसी संवादशीलता, सहिष्णुता और परस्पर सम्मान में निहित है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि भारत की विविध धार्मिक परंपराओं को केवल सांस्कृतिक अवशेषों के रूप में न देखा जाए, बल्कि उन्हें जीवित आध्यात्मिक धरोहर मानते हुए उनके ऐतिहासिक योगदान और संवेदनाओं का समुचित सम्मान किया जाए। जैन धर्म ने अहिंसा, सह-अस्तित्व और विश्वबंधुत्व का जो संदेश मानवता को दिया है, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना सहस्रों वर्ष पूर्व था।

अतः केंद्र सरकार, राज्य सरकारों तथा संबंधित सांस्कृतिक एवं पुरातात्त्विक संस्थाओं से विनम्र आग्रह है कि जैन धर्म की स्वतंत्र धार्मिक पहचान, उसके ऐतिहासिक योगदान और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण के प्रति संवेदनशील एवं न्यायपूर्ण दृष्टिकोण अपनाया जाए तथा भविष्य में ऐसे विषयों पर निर्णय लेते समय जैन समाज की ऐतिहासिक उपस्थिति, परंपराओं और भावनाओं का समुचित सम्मान सुनिश्चित किया जाए। यही भारतीय संविधान की आत्मा, सांस्कृतिक न्याय और राष्ट्रीय समरसता की वास्तविक भावना है।

साधु-सुरक्षा: समाज की संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का प्रश्न

बढ़ती दुर्घटनाएँ केवल हादसे नहीं, समाज के लिए चेतावनी हैं

धर्म का बदलता स्वरूप और घटती सहभागिता

- राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद

वर्तमान समय में धर्म का स्वरूप तेजी से बदलता दिखाई दे रहा है। श्रद्धा अब व्यवहार से अधिक प्रदर्शन में दिखाई देने लगी है। सोशल मीडिया पर पोस्ट, स्टेटस, रील्स और श्रद्धांजलियाँ देना सरल हो गया है, परंतु साधु-संतों के वास्तविक जीवन संघर्ष, विहार और सुरक्षा के प्रति समाज की सक्रिय भागीदारी लगातार कम होती जा रही है। साधु-संत तप, त्याग और संयम की जीवित प्रतिमाएँ हैं। वे केवल किसी समाज या परंपरा के धार्मिक प्रतिनिधि नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिक चेतना हैं। उनका सुरक्षित विहार केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक उत्तरदायित्व भी है।

रींवा की दुर्घटना: एक गहरी चेतावनी- हाल ही में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की शिष्या आर्यिका श्रुतमति माताजी एवं आर्यिका उपशममति माताजी रींवा में हुई दुर्घटना में समाधि को प्राप्त हुईं। यह घटना केवल एक दुर्घटना नहीं है। यह पूरे समाज की संवेदनशीलता, व्यवस्था और जिम्मेदारी पर गंभीर प्रश्नचिह्न है।

पिछले कुछ वर्षों में दिगंबर और श्वेतांबर दोनों समाजों के अनेक साधु-संत सड़क दुर्घटनाओं एवं असुरक्षित विहार परिस्थितियों के कारण असमय काल-कवलित हुए हैं। लगातार बढ़ती ऐसी घटनाएँ अब अत्यंत चिंतनीय और समाज के लिए घातक संकेत बन चुकी हैं।

साधु-संघ का विहार और बढ़ते खतरे- आज प्रत्येक ग्राम और नगर में यह दृश्य सामान्य होता जा रहा है कि साधु-संघ अत्यंत सीमित सहयोगियों या केवल पैदल कर्मचारियों के साथ विहार कर रहा है। धूप, वर्षा, ठंड, व्यस्त यातायात, असुरक्षित सड़कें और अव्यवस्थित मार्ग उनके लिए निरंतर संकट उत्पन्न कर रहे हैं।

वास्तविकता यह है कि दुर्घटनाओं के बाद समाज और संस्थाएँ भावुक अवश्य होती हैं, परंतु दुर्घटनाएँ रोकने हेतु संगठित व्यवस्था खड़ी करने में अभी भी गंभीर कमी दिखाई देती है। यदि समाज समय रहते नहीं जागा, तो भविष्य में ऐसी घटनाएँ और अधिक भयावह रूप ले सकती हैं।

समाज और प्रशासन-दोनों की जिम्मेदारी; साधु-संतों की सुरक्षा केवल समाज की नहीं, प्रशासन की भी जिम्मेदारी है। जहाँ-जहाँ साधु-संघ का विहार हो, वहाँ स्थानीय प्रशासन, यातायात विभाग एवं सामाजिक संगठनों के बीच समन्वय स्थापित किया जाना चाहिए। विहार मार्गों की सुरक्षा, यातायात नियंत्रण, विश्राम स्थलों की व्यवस्था तथा आपातकालीन सहायता के लिए स्पष्ट व्यवस्थाएँ बनाना समय की आवश्यकता है। धर्म और अध्यात्म की रक्षा केवल भाषणों से नहीं, व्यवस्थाओं से होती है।

प्रत्येक ग्राम और नगर में बने "साधु सेवा टीम" - अब समय आ गया है कि समाज केवल प्रतिक्रिया देने वाला नहीं, बल्कि पूर्व तैयारी करने वाला समाज बने। प्रत्येक ग्राम, नगर एवं तीर्थ क्षेत्र में एक संगठित "साधु सेवा टीम" का गठन होना चाहिए, जो निम्न व्यवस्थाओं को व्यवस्थित रूप से संचालित करे:

- विहार मार्ग की पूर्व जानकारी और सुरक्षा
- आहारचर्या की समुचित व्यवस्था
- निहार एवं विश्राम स्थलों का समन्वय
- यातायात और भीड़ नियंत्रण
- आपातकालीन चिकित्सा सहायता
- स्थानीय समाज से सतत संपर्क

यह कार्य केवल कुछ लोगों पर नहीं छोड़ा जा सकता। यह संपूर्ण समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

बने "साधु सेवा सेना" — बिना किसी भेदभाव के: आज आवश्यकता इस बात की है कि संपूर्ण जैन समाज मिलकर एक व्यापक "साधु सेवा सेना" का निर्माण करे। यह सेवा संगठन दिगंबर-श्वेतांबर, पंथ, क्षेत्र या परंपरा के भेद से ऊपर उठकर कार्य करे। क्योंकि दुर्घटना साधु का पंथ देखकर नहीं होती, और सुरक्षा भी पंथ देखकर नहीं दी जानी चाहिए। साधु-संत संपूर्ण समाज की आध्यात्मिक धरोहर हैं। उनकी सुरक्षा सामूहिक दायित्व है।

आत्ममंथन का समय

हमें स्वयं से प्रश्न पूछना होगा:

- क्या हमारी श्रद्धा केवल सोशल मीडिया पोस्टों तक सीमित हो गई है?
- क्या हम केवल दुर्घटनाओं के बाद शोक व्यक्त करने वाला समाज बनते जा रहे हैं?
- क्या धर्म अब व्यवहार से अधिक प्रदर्शन बनता जा रहा है?

यदि इन प्रश्नों से भीतर बेचैनी उत्पन्न होती है, तो यही जागृति का प्रारंभ है। जब कोई साधु धूप में नंगे पाँव चलता है, तो वह केवल अपना विहार नहीं कर रहा होता, वह समाज की आत्मा को जीवित रखने का प्रयास कर रहा होता है। और जब किसी सड़क पर एक साधु असमय समाधि को प्राप्त होता है, तो केवल एक संत नहीं जाता — समाज की संवेदना का एक अंश भी उसके साथ मौन हो जाता है।

समय अभी भी है...
श्रद्धांजलियों से पहले सुरक्षा की व्यवस्था कीजिए।
पोस्ट लिखने से पहले सहभागिता निभाइए।
क्योंकि धर्म तभी सुरक्षित रहेगा, जब साधु सुरक्षित रहेंगे।

अपूरणीय क्षति

स्व. श्री उमानाथ दुबे
10.05.41 - 29.05.26

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी समस्त दि. जैन तीर्थों का संरक्षण का संरक्षण करने वाली सर्वोच्च लोकतांत्रिक संस्था है। 124 वर्षों की कालावधि में अनेक स्वनाम धन्य महापुरु ने इस संस्था को नेतृत्व प्रदान किया है। सभी अध्यक्षों एवं उनके सहयोगी महामंत्रियों को विगत 59 वर्षों से अपना सतत् सक्रिय सहयोग प्रदान करने वाले श्री उमानाथ दुबे जी गत् 29 मई 2026 को अचानक हम सबका साथ छोड़कर अनन्त की यात्रा पर प्रयाण कर गये। वे अपने कार्य के इतने अनुभवी एवं समर्पित थे कि तीर्थक्षेत्र कमेटी के मुम्बई कार्यालय का पत्राचार, जैन तीर्थ वन्दना के संयोजन/प्रकाशन/वितरण आदि के समस्त कार्य सक्षमता से करते थे। विभिन्न न्यायालयीन प्रकरणों में वकीलों से सम्पर्क करने में पदाधिकारियों को सहयोग करना, वकीलों को आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध कराने के काम तत्परता पूर्वक करते थे। उनके आकस्मिक निधन से मुम्बई कार्यालय में एक अजीब सी रिक्तता का अहसास हो रहा है किन्तु जैन दर्शन ही नहीं समस्त आस्तिक भारतीय दर्शनों का एक ही कहना है कि आयु कर्म पूर्ण होने पर जीव को कोई बचा नहीं सकता सबको एक न एक दिन इस नश्वर शरीर को छोड़ना ही होता है। इस शाश्वत सत्य के अनुरूप दुबे जी आयुकर्म पूर्ण होने पर इस शरीर को यहीं छोड़ का अनन्त यात्रा पर चले गये। हमZ स्वयं अपनी ओर से एवं समस्त तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से दिवंगत आत्मा को श्रेष्ठगति एवं शोक संतप्त परिवार हेतु धैर्य की कामना करता हूं। हम सदैव दुबे जी के समर्पण एवं निष्ठा को स्मरण करते रहेंगे।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

संतोष जैन पेंढ़ारी
राष्ट्रीय महामंत्री

आशापुरी (भोजपुर) की परमारकालीन जैन धरोहर संरक्षण की प्रतीक्षा में

सतमासिया जैन मंदिर समूह में उपेक्षित पड़ी भगवान आदिनाथ की विशाल प्रतिमा के संरक्षण एवं पुनर्स्थापन की उठी मांग

- राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद

मध्यप्रदेश के विश्व प्रसिद्ध भोजपुर(जिला रायसेन) क्षेत्र के समीप स्थित ग्राम आशापुरी आज भी परमारकालीन स्थापत्य कला, धार्मिक चेतना और भारतीय सांस्कृतिक वैभव की मौन गाथा सुनाता है। किंतु अत्यंत खेद का विषय है कि इसी ऐतिहासिक क्षेत्र के सतमासिया जैन मंदिर समूह में भगवान आदिनाथ की विशाल एवं प्राचीन प्रतिमा वर्षों से खंडित अवस्था में भूमि पर पड़ी हुई है और समुचित संरक्षण की प्रतीक्षा कर रही है। जैन समाज एवं पुरातत्व प्रेमियों ने इस अमूल्य धरोहर के संरक्षण, पुनर्स्थापन एवं व्यवस्थित विकास की मांग शासन, प्रशासन एवं भारतीय पुरातत्व विभाग से की है।

इस संबंध में इंजीनियर अजित कुमार जैन, भोपाल ने बताया कि समाज द्वारा पुरातत्व विभाग एवं रायसेन कलेक्टर को पत्र प्रेषित कर ध्यान आकर्षित कराया गया है। उन्होंने बताया कि आशापुरी क्षेत्र परमार शासनकाल की महत्वपूर्ण स्थापत्य एवं सांस्कृतिक विरासत है, जहां दसवीं–ग्यारहवीं शताब्दी में लगभग 26 मंदिरों का निर्माण कराया गया था। इनमें भूतनाथ मंदिर समूह, बिलौटा धाम तथा सतमासिया जैन मंदिर समूह विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

लाल बलुआ पत्थरों से निर्मित ये मंदिर भूमिजा स्थापत्य शैली के उत्कृष्ट उदाहरण माने जाते हैं और मध्यकालीन भारतीय वास्तुकला की समृद्ध परंपरा को आज भी जीवंत बनाए हुए हैं।

सतमासिया जैन मंदिर समूह में स्थित भगवान आदिनाथ की प्रतिमा लगभग 14 फीट लंबी एवं अत्यंत भव्य शिल्पकला से युक्त बताई जाती है। कायोत्सर्ग मुद्रा में निर्मित इस प्रतिमा में लंबे कर्ण, विशाल आभामंडल, श्रीवत्स चिन्ह तथा उत्कृष्ट नक्काशी परमारकालीन कला वैभव का परिचय कराती है। मंदिर परिसर में जैन शासन देवियों, यक्ष-यक्षणियों एवं अन्य धार्मिक आकृतियों की कलात्मक संरचनाएं भी विद्यमान हैं, जो उस कालखंड की आध्यात्मिक एवं कलात्मक समृद्धि को दर्शाती हैं।

भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा स्थल पर "सुरक्षित जैन स्मारक" का बोर्ड, बाउंड्री वॉल एवं प्रवेश व्यवस्था जैसी प्रारंभिक संरचनाएं निर्मित की गई हैं, किंतु नियमित देखरेख एवं समुचित संरक्षण के अभाव में प्रतिमा एवं अन्य पुरातात्विक अवशेष झाड़ियों और अव्यवस्था के बीच उपेक्षित स्थिति में पड़े हुए हैं।

समाजजनों का कहना है कि वर्तमान परिस्थितियों में वहां पहुंचने में भी कठिनाई होती है तथा प्राकृतिक क्षरण के कारण प्रतिमा निरंतर प्रभावित हो रही है।

जैन समाज ने मांग की है कि पूरे परिसर को व्यवस्थित रूप से विकसित कर सुरक्षित किया जाए, ताकि जैन धर्मावलंबियों, इतिहासकारों एवं पुरातत्व प्रेमियों के लिए यह स्थल आकर्षण एवं अध्ययन का केंद्र बन सके। समाज का मानना है कि यदि यहां साफ-सफाई, संरक्षण, सुरक्षा एवं प्रस्तुतीकरण की समुचित व्यवस्था की जाए तो आशापुरी क्षेत्र जैन तीर्थ एवं पुरातात्विक पर्यटन के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में विकसित हो सकता है।

समाजजनों ने यह सुझाव भी दिया है कि यदि प्रतिमा को वर्तमान स्थल पर सुरक्षित रखना संभव न हो तो भोजपुर स्थित प्राचीन जैन मंदिर परिसर के समीप किसी सुरक्षित उद्यान अथवा संरक्षित स्थल पर इसे सम्मानपूर्वक स्थापित किया जाए। इससे न केवल इस दुर्लभ धरोहर का संरक्षण संभव होगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियां भी भारत की गौरवशाली सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक विरासत को निकट से देखकर प्रेरणा एवं गौरव का अनुभव कर सकेंगी।

जैन समाज ने शासन, प्रशासन एवं भारतीय पुरातत्व विभाग से इस दिशा में शीघ्र सकारात्मक पहल करने की अपेक्षा व्यक्त करते हुए कहा है कि यह केवल एक प्रतिमा के संरक्षण का विषय नहीं, बल्कि भारत की प्राचीन सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक स्मृति और पुरातात्विक गौरव को सुरक्षित रखने का दायित्व भी है। इस संबंध में अधिक जानकारी हेतु इंजी अजित जैन भोपाल से 9826223009पर संपर्क किया जा सकता हैं।

श्रमण जैन परम्परा में चातुर्मास की अवधारणा

- प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी', वाराणसी

अपने भारत देश में वैदिक एवं श्रमण – ये दोनों संस्कृतियाँ प्राचीन काल से ही समृद्ध रही हैं, और इन दोनों में ही चातुर्मास का अत्यधिक महत्त्व है। श्रमण जैन परंपरा में तो चातुर्मास को चार मास के लंबे महापर्व के रूप में आयोजित किए जाने का विधान हैं। वर्षाकाल के आरंभ से ही चार माह के लिए एक ही स्थान पर लंबे प्रवास में साधु-साध्वियों के ज्ञान, ध्यान और संयम साधना का लाभ समाज को प्राप्त होता है। चौबीसवें एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के अनेक चातुर्मास का विवरण हमें प्राकृत जैनागमों से प्राप्त होता है। इस चातुर्मास काल में आष्टान्हिक पर्व, रक्षाबंधन, पर्युषण-दशलक्षण सांवत्सरिक महापर्व, क्षमावाणी तथा तीर्थंकरों के पञ्च कल्याणकों जैसे अनेक पर्व भी मनाए जाते हैं।

वस्तुतः यत्र-तत्र गमनागमन रूप विहारचर्या श्रमण जीवन की एक अनिवार्य एवं महत्त्वपूर्ण चर्या है। इसीलिए श्रमण को अनियत विहारी कहा जाता है। क्योंकि उत्तराध्ययन सूत्र (४/६) में कहा है कि "भारण्ड-पक्खीव चारेऽप्पमत्तो" – अर्थात् श्रमण को भारण्ड पक्षी की तरह ग्रामानुग्राम आदि क्षेत्रों में अनासक्त भाव से निरंतर विचरण करते हुए अपनी साधना में लीन रहना चाहिए। इससे सम्यग्दर्शन की शुद्धि, स्थितिकरण, रत्नत्रय की भावना, शास्त्राभ्यास, शास्त्र कौशल, तीर्थ क्षेत्रों की वंदना के साथ ही आवश्यकतानुसार समाधिमरण के योग्य क्षेत्रों का अन्वेषण जैसे सहज लाभ इस अनियत विहारचर्या से प्राप्त हो जाते हैं। किन्तु वर्षाकाल के चातुर्मास में चार माह तक निरंतर एक स्थान पर प्रवास करने का भी शास्त्रीय प्रावधान है।

चातुर्मास की अवधारणा - श्रमण जैन परम्परा में चातुर्मास अर्थात् वर्षावास, जैनमुनिचर्या का आचारगत अनिवार्य और महत्त्वपूर्ण योग है। इसे वर्षायोग,वर्षावास अथवा चातुर्मास भी कहा जाता है। श्रमण केआचेलक्य आदि दस स्थितिकल्पों में अन्तिम पर्युषणा कल्प है। जिसके अनुसार वर्षा काल के चार महीने भ्रमण अर्थात् आवागमन,विहार आदिका त्याग करके एक स्थान पर रहने का विधान है। वर्ष के बारह महीनों को मौसम की दृष्टि से प्रमुख तीन भागों में विभाजित किया गया है-

ग्रीष्म– चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़।
वर्षा – श्रावण, भाद्रपद, आश्विन तथा कार्तिक।
शीत –मार्गशीर्ष, पौष, माघ तथा फाल्गुन।

यद्यपि ये तीनों ही विभाजन चार-चार माह के हैं, किन्तु वर्षाकाल के चार महीनों का एकत्र नाम चातुर्मास, वर्षावास आदि रूप में प्रसिद्ध है। श्वेताम्बर जैन आगम परम्परा में "पर्युषणा कल्प" नाम से वर्षावास का वर्णन प्राप्त होता है। बृहत्कल्पभाष्य में इसे 'संवत्सर' कहा गया है।वस्तुतःवर्तमान युग में पर्यावरण बहुत कुछ बदल गया है। अब न तो वर्षाकाल में पूरीतरह वर्षा का भरोसा रहता है,न शीतकाल में भरपूर ठण्ड का और न इसी तरह अन्य ऋतुओं का।

वर्तमान युग में तो गर्मी के बढ़ते प्रकोप से सभी त्रस्त रहते हैं। पर्यावरण प्रदूषण का असर सर्वत्र देखा जा सकता है।किन्तु अब से सात – आठ दशक पूर्व तक ऐसी स्थिति नहीं थी।पहले आवागमन के आज जैसे साधन भी नहीं थे। बड़ी-बड़ी सड़कों का जाल नहीं था। वर्षाकाल में प्रायः सदा आकाश मण्डल में घटाएं छायी रहती थीं तथा प्रायः वर्षा भी निरन्तर होती रहती थी।अतः वर्षाकाल में यत्र-तत्र भ्रमण या विहार के मार्ग रुक जाते हैं, नदी, नाले उमड़ पड़ते हैं। वनस्पतिकाय आदि हरित्काय मार्गों और मैदानों में फैल जाती है। सूक्ष्म-स्थूल जीव-जन्तु उत्पन्न हो जाते हैं। अतः छोटे -बड़े किसी भी प्रकार के जीवों को हमारे चलने फिरने से कष्ट न पहुंचे,उनकी विराधना और आत्म विराधना (घात) से बचने के लिए श्रमण धर्म में वर्षा काल में वर्षायोग धारण,इस चातुर्मास में एकत्र-वास का विधान किया गया है। यही समय एक स्थान पर स्थिर रहने का सबसे उत्कृष्ट समय होता है। श्रमण और श्रावक-दोनों के लिए इस चातुर्मास का धार्मिक तथा आध्यात्मिक और संयम साधना के विकास की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्व है। इसीलिए श्रमण या उनके संघ के चातुर्मास (वर्षा योग) को श्रावक उसी प्रकार प्रिय और हितकारी अनुभव करते हैं, जिस प्रकार चकवा चन्द्रोदय को, कमल सूर्य को और मयूर मेघोदय को।

चातुर्मास का औचित्य– अपराजितसूरि ने भगवती आराधना की विजयोदया टीका में कहा है कि वर्षाकाल में स्थावर और जंगम सभी प्रकार के जीवों से यह पृथ्वी व्याप्त रहती है। उस समय भ्रमण करने पर महान् असंयम होता है। वर्षा और शीत वायु (झंझावात) से आत्मा की विराधना होती है। वापी आदि विविध जलाशयों में गिरने का भय रहता है। जलादि में छिपे हुए ठूठ, कण्टक आदि से अथवा जल, कीचड़ आदि से कष्ट पहुँचता है और अपना जीवन भी खतरे में पड़ सकता है।

आचारांग में कहा है कि वर्षाकाल आ जाने पर तथा वर्षा हो जाने से तथा बहुत से प्राणी उत्पन्न हो जाते हैं, बहुत से बीज अंकुरित हो जाते हैं। मार्गों में बहुत से प्राणी एवं बीज उत्पन्न हो जाते हैं। बहुत हरियाली उत्पन्न हो जाती है। ओस और पानी बहुत स्थानों में भर जाता है। काई आदि स्थान-स्थान पर व्याप्त हो जाती है। बहुत से स्थानों पर कीचड़ या पानी से मिट्टी गीली हो जाती है। मार्ग रुक जाते हैं, मार्ग पर चला नहीं जा सकता। मार्ग सूझता नहीं है,अतः इन परिस्थितियों को देखकर मुनि को वर्षा काल में एक ग्राम से दूसरे ग्राम विहार नहीं करना चाहिए। अपितु वर्षाकाल मेंयथावसर प्राप्त वसति में ही संयत रहकर वर्षावास व्यतीत करें।बृहत्कल्पभाष्य के अनुसार वर्षावास में गमन करने से पृथ्वी,जल,तेज,वायु,वनस्पति और त्रस -- इन षट्कायिक जीवों का घात तो होता ही है, साथ ही वृक्ष की शाखा आदि सिर पर गिरने, कीचड़ में रपट जाने, नदी में बह जाने, काँटा आदि लगने के भय रहते हैं।

श्रमण जैनमुनि को प्रत्येक कल्पनीय कार्य करते समय अहिंसा

और विवेक की दृष्टि रखना अनिवार्य है। वर्षाकाल में विहार करते रहने में अनेक बाधाओं के साथ ही जीव-हिंसा की बहुलता सदा रहती है, इसीलिए वर्षाकाल चार माह तक एक स्थान पर स्थिर रहकर वर्षायोग धारण का विधान है। इस प्रकार जैन परम्परा के साथ ही प्रायः सभी भारतीय परम्पराओं के धर्मों में साधुओं को वर्षाकाल के चार माह में एक स्थान पर स्थित रहकर धर्म-साधन करने का विधान है।

चातुर्मास का समय - सामान्यतः आषाढ़ से कार्तिक पूर्वपक्ष तक का समय वर्षा और वर्षा से उत्पन्न जीव-जीवाणुओं तथा अनन्त प्रकार के तृण, घास और जन्तुओं के पूर्ण परिपाक का समय रहता है। इसीलिए चातुर्मास (वर्षावास) की अवधि आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी की पूर्वरात्रि से आरम्भ होकर कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की पश्चिम रात्रि तक मानी जाती है।

वर्षावास के समय में एक सौ बीस दिन तक एक स्थान पर रहना उत्सर्ग मार्ग है। विशेष परिस्थिति अथवा कारण होने पर अधिक और कम दिन भी ठहर सकते हैं। अर्थात् आषाढ़ शुक्ला दसमी से चातुर्मास करने वाले कार्तिक की पूर्णमासी के बाद तीस दिन तक आगे भी सकारण एक स्थान पर ठहर सकते हैं। अधिक ठहरने के प्रयोजनों में वर्षा की अधिकता, शास्त्राभ्यास, शक्ति का अभाव अथवा किसी की वैयावृत्य करना आदि हैं। आचारांग में भी कहा है कि वर्षाकाल के चार माह बीत जाने पर अवश्य विहार कर देना चाहिए, यह तो श्रमण का उत्सर्ग मार्ग है। फिर भी यदि कार्तिक मास में पुनः वर्षा हो जाए और मार्ग आवागमन के योग्य न रहे तो चातुर्मास के पश्चात् वहाँ पन्द्रह दिन और रह सकते हैं।

समय की दृष्टि से वर्षावास के जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट-- ये तीन भेदबताये हैं। इनमें सांवत्सरिक प्रतिक्रमण (भाद्रपद शुक्ला पंचमी) से कार्तिक पूर्णमासी तक सत्तर दिनों का जघन्य वर्षावास कहा जाता है। श्रावण से कार्तिक तक-चार माह का मध्यम चातुर्मास है तथा आषाढ़ से मृगसर तक छह माह का उत्कृष्ट वर्षावास कहलाता है। इसके अन्तर्गत आषाढ़ बिताकर वहीं चातुर्मास करें और मार्गशीर्ष में भी वर्षा चालू रहने पर उसे वहीं बितायें।' स्थानांग आगमवृत्ति में कहा है कि प्रथम प्रावृट (आषाढ़) में और पर्युषणा कल्प के द्वारा निवास करने पर विहार न किया जाए। क्योंकि पर्युषणाकल्प पूर्वक निवास करने के बाद भाद्र शुक्ला पंचमी से कार्तिक तक साधारणतः विहार नहीं किया जा सकता, किन्तु पूर्ववर्ती पचास दिनों में उपयुक्त सामग्री के अभाव में विहार कर भी सकते है।

बृहत्कल्पभाष्य में वर्षावास समाप्त कर विहार करने योग्य समय के विषय में कहा है कि जब ईख बाड़ों के बाहर निकलने लगें, तुम्बियों में छोटे-छोटे तुंबक लग जायें, बैल शक्तिशाली दिखने लगे, गाँवों की कीचड़ सूखने लगे, रास्तों का पानी कम हो जाए, जमीन की मिट्टी कड़ी हो जाय तथा जब पथिक परदेश को गमन करने लगे तो श्रमण को भी वर्षावास की समाप्ति और अपने विहार करने का समय समझ लेना चाहिए।

चातुर्मास के योग्य स्थान - श्रमण को वर्षायोग के धारण का उपयुक्त समय जानकर धर्म-ध्यान और चर्या आदि के अनुकूल योग्य प्रासुक स्थान पर चातुर्मास व्यतीत करना चाहिए। आचारांग आगमसूत्र में चातुर्मास योग्य स्थान के विषय में कहा है कि वर्षावास करने वाले साधु या साध्वी को उस ग्राम-नगर खेड, कवंट, मडंब, पट्टण, द्रोणमुख, आकर (खदान), निगम, आश्रय, सन्निवेश या राजधानी की स्थिति भलीभाँति जान लेनी चाहिए। जिस ग्राम-नगर यावत् राजधानी में एकान्त में स्वाध्याय करने के लिए विशाल भूमि न हो, मल-मूत्र त्याग के लिए योग्य विशाल भूमि न हो, पीठ (चौकी) फलक, शय्या एवं संस्तारक की प्राप्ति सुलभ न हो और न प्रासुक (निर्दोष) एवं एषणीय आहार-पानी हो सुलभ हो, जहाँ बहुत से श्रमण, ब्राह्मण, अतिथि, दरिद्र और भिखारी पहले से आए हुए हों और भी दूसरे आनेवाले हों, जिससे सभी मार्गों पर जनता की अत्यन्त भीड़ हो और साधु-साध्वी को भिक्षाटन, स्वाध्याय, शौच आदि आवश्यक कार्यों के लिए अपने स्थान से सुखपूर्वक निकलना और प्रवेश करना भी कठिन हो, स्वाध्याय आदि क्रिया भी निरुपद्रव न हो सकती हो, ऐसे ग्राम-नगर आदि में वर्षाकाल प्रारम्भ हो जाने पर भी वर्षावास व्यतीत न करे।

प्राकृत आगम कल्पसूत्र की कल्पलता टीका के अनुसार जैन साधु -साध्वियों को चातुर्मास के योग्य स्थान में निम्नलिखित गुण होना चाहिए--जहाँ विशेष कीचड़ न हो, जीवों को अधिक उत्पत्ति न हो, पंचम समिति के सम्यक् पालन हेतु शौच-स्थल निर्दोष हो, रहने का स्थान शान्तिप्रद एवं स्वाध्याय योग्य हो, गोरस की अधिकता हो, जनसमूह भद्र हो, राजा धार्मिक वृत्ति का हो, भिक्षा सुलभ हो, श्रमण-ब्राह्मण का अपमान न होता हो। ऐसे ही अनुकूल और निरापद स्थान चातुर्मास के सर्वथा योग्य होते हैं।

वर्षायोग ग्रहण एवं उसकी समाप्ति की विधि - यद्यपि दूसरी सदी के वट्टकेराचार्य द्वारा रचित मूलाचार आदि प्राकृत भाषा के प्राचीन ग्रन्थों में वर्षायोग गृहण आदि की विधि का स्पष्ट उल्लेख नहीं है ,किन्तु उत्तरवर्ती विद्वान् पंडित आशाधर प्रणीत ग्रन्थ अनगार धर्मामृत ग्रंथ में कहा है कि आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी की रात्रि के प्रथम पहर में पूर्व आदि चारों दिशाओं में प्रदक्षिणा क्रम से लघु चैत्यभक्ति चार बार पढ़कर सिद्धभक्ति, योगिभक्ति, पंचगुरुभक्ति और शान्तिभक्ति करते हुए आचार्य आदि साधुओं को वर्षायोग ग्रहण करना चाहिए तथा कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की रात्रि के पिछले पहर में इसी विधि से वर्षायोग को छोड़ना चाहिए।

आगे बताया है कि वर्षायोग के सिवाय अन्य हेमन्त आदि ऋतुओं में अर्थात् ऋतुबद्ध काल में श्रमणों का एक स्थान में एक मास तक रुकने का विधान है।

अनगारधर्मामृत में ही आगे कहा है कि जहाँ चातुर्मास करना अभीष्ट हो, वहाँ आषाढ़ मास में वर्षायोग के स्थान पर पहुँच जाना चाहिए तथा मार्गशीर्ष महीना बीतने पर वर्षायोग के स्थान को छोड़ देना चाहिए। कितना ही प्रयोजन होने पर भी वर्षा योग के स्थान में श्रावण कृष्णा चतुर्थी तक अवश्य पहुँच जाना चाहिए। इस तिथि का उल्लंघन नहीं करना चाहिए तथा कितना ही प्रयोजन होने पर भी नहीं। कार्तिक शुक्ला पंचमी तक वर्षायोग के स्थान से अन्य स्थान को नहीं जाना चाहिए। यदि किसी दुर्निवार

उपसर्ग आदि के कारण वर्षायोग के उक्त प्रयोग में अतिक्रम करना पड़े तो साधु को प्रायश्चित्त लेना चाहिए।

वर्षायोग धारण के विषय में श्वेताम्बर परम्परा के कल्पसूत्र आगम में कहा है कि मासकल्प से विचरते हुए निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों को आषाढ़ मास की पूर्णिमा को चातुर्मास के लिए वसना कल्पता है। क्योंकि निश्चय ही वर्षाकाल में मासकल्प विहार से विचरने वाले साधुओं और साध्वियों के द्वारा एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों को विराधना होती है।कल्पसूत्रनिर्युक्ति में भी कहा है कि आषाढ़ मास की पूर्णिमा तक नियत स्थान पर पहुँचकर श्रावण कृष्ण पंचमी से वर्षावास प्रारम्भ कर देना चाहिए। उपयुक्त क्षेत्र न मिलने पर श्रावण कृष्ण दसमी से पाँच-पाँच दिन बढ़ाते-बढ़ाते भाद्र शुक्ल पंचमी तक तो निश्चित ही वर्षावास प्रारम्भ कर देना चाहिए, फिर चाहे वृक्ष के नीचे ही क्यों न रहना पड़े। किन्तु इस तिथि का उल्लंघन नहीं होना चाहिए।

चातुर्मास के बीच में भी विहार करने के कारण - भगवती आराधना प्राकृत भाषा के प्राचीनग्रंथ की विजयोदया टीका में अपराजितसूरि के अनुसार वर्षायोग धारण कर लेने पर भी यदि दुर्भिक्ष पड़ जाए, महामारी फैल जाये, गाँव अथवा प्रदेश में किसी कारण से उथल-पुथल हो जाए, गच्छ का विनाश होने के निमित्त आ जाये तो देशान्तर में जा सकते हैं। क्योंकि ऐसी स्थिति में वहाँ ठहरने से रत्नत्रयधर्म और संयम की विराधना होगी। आषाढ़ की पूर्णमासी बीतने पर प्रतिपदा आदि के दिन देशान्तर गमन कर सकते हैं। स्थानांगसूत्र प्राकृत आगम में इसके पांच कारण बताये हैं–

१. ज्ञान के लिए, २. दर्शन के लिए, ३. चारित्र के लिए, ४. आचार्य या उपाध्याय की सल्लेखना/समाधिमरण के अवसर पर तथा५. वर्षाक्षेत्र से बाहर रहे हुए आचार्य अथवा उपाध्याय का वैयावृत्य करने के लिए।

साथ ही यह भी कहा है कि निर्ग्रन्थ और साध्वियों को प्रथम प्रावृट् चातुर्मास के पूर्वकाल में ग्रामानुग्राम विहार नहीं करना चाहिए। संघ में रहकर साधना ,संयम और ज्ञानाभ्यास करना चाहिए।

किन्तु इन पाँच कारणों से विहार किया भी जा सकता है–

१. शरीर, उपकरण आदि के अपहरण का भय होने पर,

२. दुर्भिक्ष होने पर,

३. किसी के द्वारा व्यथित किये जाने पर अथवा ग्राम से निकाल दिये जाने पर,

४. बाढ़ आ जाने पर तथा

५. अनार्यों द्वारा उपद्रुत किये जाने पर।

इस प्रकार श्रमण के लिए चातुर्मास अर्थात् वर्षावास का समय उसी प्रकार कषायरूपी अग्नि एवं मिथ्यात्व रूपी ताप को त्याग एवं वैराग्य की शीतल धारा से तथा स्वाध्याय और ध्यान की जलवृष्टि से शान्त करने का होता है, जिस प्रकार जल के शीतलधारा बरसकर धरती की तपन शान्त करती है।

इस तरह जैन परम्परा में चातुर्मास का धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों में विकास का महत्त्व तो है ही, इससे राष्ट्रप्रेम के साथ ही व्यक्ति और समाज को एक सूत्र में पिरोने का, वैर भाव दूर करके मैत्री,सौहार्द्र एवं समरसता का वातावरण निर्मित करने का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य सिद्ध है।

तीर्थंकर ऋषभदेव की भविष्यवाणियाँ

(महापुराण सर्ग 41 में वर्णित वर्तमान काल (पंचम काल) की सोलह विशेषताएं)

- प्रो.अनेकांत कुमार जैन, नई दिल्ली

तीर्थंकर ऋषभदेव ने भरत महाराज को उनके 16 स्वप्नों का फल दर्शाते हुए यह भविष्यवाणी की थी - जो सही हो रहीं दिखाई देती हैं।

1. 23वें तीर्थंकर तक मिथ्या मतों का प्रचार अधिक न होगा।
2. 24वें तीर्थंकर के काल में कुलिंगी उत्पन्न हो जायेंगे।
3. साधु तपश्चरण का भार वहन न कर सकेंगे।
4. मूल व उत्तरगुणों को भी साधु भंग कर देंगे।
5. मनुष्य दुराचारी हो जायेंगे।
6. नीच कुलीन राजा होंगे।
7. प्रजा जैनमुनियों को छोड़कर अन्य साधुओं के पास धर्म श्रवण करने लगेगी।
8. व्यंतर देवों की उपासना का प्रचार होगा।
9. धर्म म्लेच्छ खंडों में रह जायेगा।
10. ऋद्धिधारी मुनि नहीं होंगे।
11. मिथ्या ब्राह्मणों का सत्कार होगा।
12. तरुण अवस्था में ही मुनि पद में ठहरा जा सकेगा।
13. अवधि व मन:पर्यय ज्ञान न होगा।
14. मुनि एकल विहारी न होंगे।
15. केवलज्ञान उत्पन्न न होगा।
16. प्रजा चारित्र भ्रष्ट हो जायेगी, औषधियों के रस नष्ट हो जायेंगे।

(महापुराण/41/63-79 का भावार्थ)

बिलहरी की मूलनायक प्रतिमा विमलनाथ की या आदिनाथ की

-डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इन्दौर

मध्यप्रदेश के कटनी जिलान्तर्गत दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बिलहरी आता है। इस क्षेत्र की प्राचीन प्रतिमाओं पर हम तीन शोध आलेख- प्रथम 'अतिशय क्षेत्र बिलहरी की आदिनाथ की प्राचीन प्रतिमाएँ', द्वितीय 'बिलहरी की दो अनूठी बाहुबली प्रतिमाएं' और तृतीय 'बिलहरी की तीन प्राचीन पार्श्वजिन प्रतिमाएं' प्रकाशित कर चुके हैं। क्षेत्र के विषय में अन्य जानकारियां पूर्व आलेखों के साथ हमने संक्षेप में दीं हैं। बड़े मंदिर की प्रथम तल पर तीन बेदियां हैं। बायें ओर की प्रथम वेदी में मध्य में मूलनायक के रूप में प्राचीन सपरिकर प्रतिमा विरामान है। जिनके आगे पट्टिका पर लिखा है ''श्री विमलनाथ भगवान जी''। इस आलेख में हम प्रस्तुत प्रतिमा का परिचय और यह किन तीर्थंकर की प्रतिमा है यह प्रमाणित करने का प्रयास करेंगे।

प्रतिमा परिचय-

बिलहरी में भूगर्भ से प्राप्त 32 प्राचीन प्रतिमाओं में से यह प्रतिमा बहुत महत्वपूर्ण है। पाषाणखण्ड में निर्मित इस पद्मासन प्रतिमा के सिंहासन में विरुद्धाभिमुख सिंह हैं, मध्य में कीर्तिमुख को प्रायः लोग अच्छी नक्कसी के बेलबूटे आदि समझकर अनदेखा कर देते हैं, किन्तु यह जैन वास्तु शिल्पन का प्रमुख अंग है। कीर्तिमुख शिल्पित किये बिना कर्नाटक और तमिलनाडु का कोई भी वास्तु शिल्पन हुआ ही नहीं है। इसे प्रायः मंदिर के अन्तः, बाह्य दीवारों, द्वारों, स्तंभों, शिखरों, मूर्तियों के पदपीठ और मूर्तियों के वितान-शीर्षभाग में स्थान मिला है।

इस प्रतिमा में कीर्तिमुख के नीचे तीर्थंकर का लघु चिह्न शिल्पित है। और सबसे नीचे धर्मचक्र है, उसके दोनों ओर सिंहासन के दो सिंह विरुद्धाभिमुख शिल्पित हैं। प्रतिमा के दायें ओर के सिंह के मुख के निकट शासनदेव यक्ष और बाईं ओर यक्षी शिल्पित है। यक्ष का मुख गाय के मुख जैसा है। सिंहासन पर एक स्तंभो की आधार चौकी, उस पर एक साधारण पाटा, उस पर नक्कसीयुक्त वृत्ताकार चरण-चौकी, जिसके ऊपर मूलनायक प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में विराजमान है। चरण चौकी के आगे तीन लघु नालदण्डिका युक्त सुन्दर अर्धविकसित पद्म शिल्पित हैं। मुख्य प्रतिमा जी के वक्ष पर सुन्दर श्रीवत्स है, स्कंधों पर केश लटिकाएं हैं, गले में त्रिवली, उच्च उष्णीषयुक्त कुंचित केश और शिर के पीछे सुन्दर प्रभावल उत्कीर्णित है। ऊपर झल्लरियों से समन्वित त्रिछत्र, उसपर मुखाकृतियुक्त ढोल पर थाप देता हुआ दुन्दुभिवादक है। उसके दोनों ओर एक-एक नृत्यांगना है। त्रिछत्र के दोनों ओर युगल-युगल पुष्पवर्षक माल्यधारी देव-देवी हैं। परिकर में मुख्य जिन प्रतिमा के पार्श्वो में चरणचौकी के निकट से बायें ओर आराधिका और दायें ओर आराधक अंजलिबद्ध खड़े हैं। उनसे ऊपर को दोनों ओर चामरधारी हैं। उनसे ऊपर अलग आधार दर्शाते हुए मुख्य प्रतिमा के शिर-पार्श्वों में गजलक्ष्म्याभिषेक के गज भी अलग-अलग उत्कीर्णित हैं। गज की सुण्डों में कलश है और गजारूढ अभिषेकर्ता के हाथों में भी कलश दर्शाया गया है।

मुख्य पद्मासन प्रतिमा के पादपीठ के दोनों ओर कुछ नीची और छोटी एक-एक पादपीठ और है। इनमें भी सिंहासन के विरुद्धाभिमुख सिंह हैं। यदि सिंहासन में विरुद्धाभिमुख हैं तो वे तीर्थंकर के चिह्न नहीं हैं और अभिमुख अर्थात् आमने-सामने मुख होने पर वे तीर्थंकर के चिह्न माने जाते हैं। बायें तरफ के पादपीठ में नीचे मध्य में आराधिका बैठी है और दायें तरफ आराधक बैठा दर्शाया गया है। इन पादपीठों पर एक-एक कायोत्सर्गस्थ जिन प्रतिमा है। इनका एक-एक ही चॅवरधारी है। नियमानुसार दोनों ओर ही चॅवरधारी होते हैं। इनके वक्ष पर श्रीवत्स चिह्न है। कर्ण स्कंधों को स्पर्शित हैं, किन्तु केश लटिकाएं नहीं हैं।

दोनों लघु प्रतिमाओं के उष्णीषयुक्त कुंचित केश हैं, उसपर छत्रत्रय, तदोपरि दुन्दुभिवादक और ऊपर देवकुलिका का शिखर दर्शाया गया है। परिकर में इन कायोत्सर्गस्थ प्रतिमाओं की संरचना के ऊपर जो सम्पूर्ण शिल्पन का भी वितान भाग है, में एक-एक पद्मासनस्थ लघु जिन प्रतिमा हैं। इनके भी सिंहासन के सिंह, एक-एक चॅवरधारी और छत्रत्रय शिल्पित हैं। एक ही शिलाफलक पर प्रतिमांकन में परिकर में चार जिन प्रतिमा और एक मुख्य प्रतिमा होने से इस शिल्पन को पंचतीर्थी प्रतिमा कहा जाता है।

किन तीर्थंकर की है यह प्रतिमा ?- प्रतिमा के पादपीठ पर एक घिसा हुआ लांछन है जिसे बराह-सूकर अनुमानित कर इसे तेरहवें तीर्थंकर विमलनाथ की प्रतिमा घोषित कर पट्टिका लिखवा दी गई होगी। किन्तु वास्तविकता कुछ और है। चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाओं के शिल्पन में प्रारंभिक प्रतीक के रूप में वृषभनाथ-आदिजिन को उनकी दीर्घ तपस्या के कारण केशजटाओं और पार्श्वनाथ को उनके उपसर्ग निवारण की घटना के साथ शिर पर सप्त या अधिक फणाच्छान युक्त शिल्पित किया गया। वाद में सुपार्श्वनाथ के तीन या पांच सर्पफणाच्छादन और शनैः शनैः अन्य तीर्थंकरों के चिन्हों का और परिकर में उनके यक्ष-यक्षी का भी शिल्पन हुआ। ऋषभनाथ की प्राचीनतम प्रतिमाएं कुषाणकाल (विक्रम की पहली-दूसरी शताब्दी) की मथुरा और चौसा से प्राप्त हुई हैं। इनमें तीन या पांच लटकती हुई केशवल्लरियां शोभित हैं। मथुरा की तीन प्रतिमाओं पर पीठिका लेखों में ऋषभ का नाम है। प्रथम शताब्दी से 17वीं शताब्दी तक ऋषभनाथ की प्रतिमाओं में समयानुसार सुन्दर केश-मुकुट और स्कंधों पर केश लटिकाओं के शिल्पन की परम्परा अनवरत रूप से रही है। अतः जिस प्रतिमा के स्कंधों पर केश-लटिकाएं देखें उसे ऋषभनाथ की समझाना चाहिए। किन्तु नौवीं से तेरहवी शताब्दी में कुछ अन्य तीर्थंकरों की प्रतिमाओं के स्कधों पर भी केश-लटिकाएं शिल्पित की गईं, अतः पहचान में सावधानी भी आवश्यक है। वहीं विमलनाथ की सर्व प्राचीन प्रतिमा वाराणसी से प्राप्त हुई, जो सारनाथ संग्रहालय में संग्रहीत है। विमलनाथ की प्रतिमाओं का शिल्पन अधिक नहीं हुआ है।

चिह्न के अतिरिक्त तीर्थंकर प्रतिमा की पहचान का आधार है उसके परिकर में तीर्थंकर के यक्ष-यक्षी की शिल्पन। प्रतिष्ठासारोद्धारादि ग्रन्थों के अनुसार ऋषभनाथ का यक्ष गोमुख और यक्षी चक्रेश्वरी है। तथा तीर्थंकर विमलनाथ का यक्ष-षण्मुख और यक्षी वैरोटी है। गोमुख अर्थात् जिसका शरीर मनुष्य के समान और मुख गाय के समान हो। तथा षण्मुख का तात्पर्य छह मुख वाला। यक्षियों में अम्बिका की पहचान उसके गोद में लिये हुए बालक, धरणेन्द्र-पद्मावती की त्रिफणाच्छादन और गोमुख की पहचान गाय के मुख के समान मुख शिल्पित किये जाने की परम्परा के कारण आसनी से हो जाती है।

1. बिलहरी की विमलनाथ पट्टिका वाली प्रतिमा के पादपीठ में ध्यान से देखें तो दायें ओर के सिंह के मुख के निकट जो यक्ष शिल्पित है, उसका मुख गाय के मुख की तरह है। अतः यह प्रथम तीर्थंकर का शासन देव गोमुख यक्ष है, इसलिए यह प्रतिमा आदि तीर्थंकर ऋषभनाथ की है। यहां की ऋषभनाथ की अन्य दो प्रतिमाओं के पादपीठ के पास भी गोमुख यक्ष शिल्पित है।

2. यहां की अन्य तीन ऋषभनाथ की प्रतिमाओं के स्कंधों पर शिल्पित केश-लटिकाओं के समान इस प्रतिमा के स्कंधों पर केश-लटिकाएं शिल्पित हैं, अतः यह ऋषभनाथ की प्रतिमा है।

3. यहां के पार्श्वनाथ जिनालय के तल मंजिल के प्रथम वेदी की मूलनायक ऋषभनाथ की प्रतिमा के चिह्न वृषभ से इस प्रतिमा के चिह्न की समानता है, अतः यह ऋषभनाथ की प्रतिमा है।

4. इसमें बैठा हुआ पशु है। सूकर को बैठी स्थिति में चिह्न के रूप में दर्शाये जाने का कोई उदाहरण अबतक प्राप्त नहीं हुआ है, उसे खड़ा हुआ ही दर्शाया गया है, इसलिए यह विमलनाथ की न होकर ऋषभनाथ की प्रतिमा है।

समाज सर्वोच्च न्यायालय में भोजशाला सत्य को पराजित नहीं होने दें

-निर्मलकुमार पाटोदी, इंदौर

बात 124 वर्ष पहले की है, सन् 1891 में मथुरा के जम्बूस्वामी दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र के वार्षिक मेले में भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा की स्थापना हुई और महासभा के सातवें अधिवेशन में सेठ माणिकचंद जौंहरी (जन्म संवत 1902 तथा स्वर्गवास श्रावण वदी-9, गुरुवार 16 जुलाई 1914) बम्बई ने तीर्थक्षेत्रों की दयनीय स्थिति को देखते हुए उनकी सार-संभाल के लिए एक सामाजिक संगठन के अभाव पर अत्यंत मार्मिक भाषण दिया। पण्डित गोपालदास जी बरैया के प्रस्ताव पर, सेठ माणिकचंद, बाबू देवकुमार जी रईस, आरा और बैरिस्टर मुंशी चम्पतराय जी के समर्थन से **22 अक्तूबर, 1902 को "भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी" का गठन हुआ था**। माणिकचंद जी को 35 सभासदों के प्रस्ताव पर कमेटी का महामंत्री बनाया गया। तब अध्यक्ष का पद नहीं था।

सेठ माणिकचंद जी तीर्थरक्षक के रूप में समर्पित, जुझारू तथा अतुलनीय पदाधिकारी हुए हैं। वह हर अवसर पर सबसे पहले स्वय दान की घोषणा करते थे, उनके बाद अन्य लोग घोषणा करते थे। उनके कार्यकाल में कभी भी आर्थिक कठिनाई नहीं आई। उन्होंने तीर्क्षों के संरक्षण के लिए न दिन देखा और रात। जीवन के अतिम समय तीर्थों के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया था।

सेठ माणिकचंद जौंहरी के द्वारा स्थापित तीर्थक्षेत्र कमेटी का शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव 22 अक्तूबर 2026 से 22 अक्तूबर 2027 तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर यह चर्चा करना संगत होगा कि मालवा-धार (इंदौर से 62 किलोमीटर) पर स्थित हमारा दिगंबर जैन धर्मक्षेत्र है। समाज की इस प्राचीन धरोहर की रक्षा के लिए महासभा, तीर्थक्षेत्र कमेटी और दिगंबर जैन समाज की राष्ट्रीय संस्थाओं को आगे आना चाहिए था।भोजशाला, धार सबसे पहले जैनधर्म का गुरुकुल रहा है। जिसमें शिक्षार्थी दर्शन कर सकें, जैन सरस्वती की मूर्ति विराजमान की गई थी। वर्तमान में यही जैन सरस्वती की मूर्ति को इंग्लैंड ले जाने वाले अंग्रेज अधिकारी मेजर जनरल विलियम किनकेड था। पोलिटिकल एजेंट के रूप मे कार्यरत थे। सन् 1875 धार के पुराने सिटी पैलेस परिसर में खुदाई और पुनर्निर्माण का काम चल रहा था , तब यह जैन सरस्वती की मूर्ति मिली। लंदन ले जाने के लिए मूर्ति को अपने पास रंख लिया1886 में वह भारत से वापस लौटे, और 1891 में उन्होंने इस मूर्ति को ब्रिटिश म्यूजियम लंदन में जमा कराया। 1909 में विलियम किनकेड की मृत्यु के बाद यह मूर्ति म्युजियम के संग्रह का हिस्सा बन गई। म्युजियम के रिकॉर्ड में संफेद संगमरमर की यह मूर्ति जैन रूप में है। मूर्ति के साथ प्रस्तुत विवरण में लिखा हुआ है कि यह मूर्ति मालवा से लाई गई है। इस मूर्ति के दोनों ओर दो-दो और सिर के ऊपर की ओर एक पदमासन तीर्थंकर की मूर्ति उकेरी हुई है। इसी म्यूजियम में एक अन्य दूसरी जैन सरस्वती मूर्ति भी है। जिसके प्रदर्शित विवरण में लिखा हुआ है, मूर्ति कर्नाटक से लाई गई है।

इसी मूर्ति के संबंध में हिंदू पक्ष के वरिष्ठ एडवोकेट्स ने उच्च न्यायालय, इंदौर की खण्डपीठ में हर संभव प्रयास करके बताया है कि यह हिंदू वाग्गदेवी सरस्वती की मूर्ति है। जो धार भोजशाला से ले जाई गई है। है। न्यायालय ने भी अपने निर्णय में हिंदू पक्ष को मान्य करते हुए 242 पृष्ठ पर भोजशाला की हिंदू वाग्देवी की मूर्ति माना है।

भोजशाला: राजा भोज (1000-1055) परमार वंश के सबसे बड़े शासक, शिक्षा और साहित्य कला, संगीत के अनन्य उपासक थे। उनके द्वारा ही भोजशाला गुरुकुल की स्थापना की गई थी। जिसे मुस्लिम आक्रांता शासकों ने मस्जिद के रूप में परिवर्तित कर दिया था। मस्जिद की दीवारों में लगी शिलाओं पर उत्कीर्ण मूल्यवान रचनाएं पुनर्प्राप्त की गई है। शिलाओं में कूर्मावतार या विष्णु के मगरमच्छ अवतार प्राकृत भाषा में लिखित दो स्तोत्र उत्कीर्ण हैं। दो सर्पबंध स्तंभ शिलालेख। जो 11 वीं-12 वीं शताब्दी के हैं। ये शिलालेख शास्त्रीय संस्कृत में नाटकीय रचना है। यह अर्जुनवर्मा देव के शासनकाल (1299-10से 1215-18 ई .) के दौरान उत्कीर्ण किया गया था। यह नाटक राजकीय शिक्षक मदन द्वारा काव्य रूप में लिखा गया था, जो कि प्रसिद्ध जैन विद्वान पण्डित आशाधर के शिष्य थे। जिन्होंने स्वयं भी परमारों की शाही अदालत को सुशोभित किया और मदन को संस्कृत काव्य पढ़ाया। नाटक का नाम करपुरमंजरी है, जो अर्जुनवर्मा देव के सम्मान में है, जिन्हें मदन ने पढ़ाया था और जिनकी अदालत को वे शोभायमान करते थे। यह नाटक परमारों और चालुक्यों के बीच के युद्ध को संदर्भित करता है। जो विवाह गठबंधन द्वारा समाप्त हो गया था। धार को महलों का शहर के रूप में वर्णित किया गया है इसके आसपास फैली पहाड़ियों

पर खूबसुरत उद्यान थे। एक उद्यान में भक्तामर स्तोत्र के रचयिता आचार्य मानतुंग विराजमान थे। भोज ने धार को 'मालवा की रानी' के रूप में बनाया था। धारानगरी में 84 चौराहे थे।

पण्डित आशाधर जी कागदीपुरा (नालछा) में माण्डलगढ़ से आकर धारानगरी (धार) और फिर नलगच्छपुर (वर्तमान में कागदीपुर-नालछा) में बस गये थे। नालछा में ही पण्डित आशाधर जी द्वारा विद्यापीठ की स्थापना की गई थी। जो धार और माण्डू के बीच में है। आप व्याकरण और धर्मशास्त्र के विशेषज्ञ थे।

उच्च न्यायालय इंदौर में दिल्ली के एक श्रावक सलेकचंद जैन पक्षकार बन गए थे। उनके द्वारा उच्च न्यायालय में 142 पृष्ठ का वाद प्रस्तुत किया गया। उच्च न्यायालय की इंदौर खण्डपीठ के आदेशानुसार भारतीय पुरातत्व विभाग ने सर्वेक्षण करके अपनी 2179 पृष्ठ की रिपोर्ट तैयार की है। उच्च न्यायालय, इंदौर की खण्डपीठ के 15 मई 2026 के निर्णय का यह अंश सर्वोच्च न्यायालय में संवैधानिक मुद्दे के रूप में उठाए जाने योग्य है। 242 पृष्ठ के निर्णय मे है:- Trust to press the argument that Jains are declared religious minority and therefore, Jain community enjoys the religious freedom, as a fundamental right, guaranteed under Article 29 of the Constitution.

Page-235: पर है:

Among these some figure of a "Sadhak" (spiritual seeker) or some figure of Jain Thirthankara seated in the "Padmasana" posture is also visible. As discussed previously, the presence of a Jain Tirthankara or a "Sadhak" or ascetic seated in "Padmasana" Hindu statue of goddess "Saraswati" is entirely natural, given that Jainism is, a branch of Hinduism.

प्रमाण से संबंधित पुस्तकें:-

———————————-

ब्रिटिश इतिहासकार अर्नेस्ट बर्न्स : Dhar And Mandu.

सीई लुआर्ड की 1912 : Dhar And Mandu-A Sketch for the Sight-Seer

तथा Charles Major C.E. Luard, I.A. M.A. (Oxon.)——1916

उच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध मुस्लिम पक्ष की ओर से सर्वोच्च न्यायालय, भारत, दिल्ली में तीन स्पेशल पीटीशन प्रस्तुत कर दी गई है। जैन समाज की ओर से सर्वोच्च न्यायालय में स्पेशल पीटीशन प्रस्तुत नहीं हो सकी है।

उच्च न्यायालय, इंदौर खण्डपीठ के समक्ष हिंदू पक्ष की और से कम से कम छह वरिष्ठ एडवोकेट्स थे। मुस्लिम पक्ष की ओर से भी इतने ही वरिष्ठ एडवोकेट्स ने पक्ष प्रस्तुत किया। आर्थिक कठिनाई के चलते जैन समाज के सलेकचंद की ओर से दिल्ली के एक एडवोकेट थे। अगर जैन समाज को जाने माने वरिष्ठ एडवोकेट्स का न्यायालय में साथ मिल जाता तो हमारे पक्ष प्रभावी ढंग से प्रस्तुत हो सकता था। भोजशाला, धार के संबंध में जैन समाज और धर्म से संबंधित प्रमाण प्रयाप्त संख्या में हैं। इंदौर उच्च न्यायालय के वरिष्ठ एडवोकेट्स की सूची में छह जैन नाम हैं। इनसे जैन पक्ष में जुड़ने के लिए सम्पर्क भी किया गया था। अगर समाज जुड़ जाता तो बात बन सकती थी। समाज की उदासीनता रही। समाज को अपने धर्मक्षेत्र की रक्षा के लिए स्वत: जुड़ जाना चाहिए था। यह जैन विरासत समाज की धरोहर है, एक व्यक्ति तो स्वत: प्रेरणा से आगे आ गया।

15 मई 2026 को उच्च न्यायालय, इंदौर खण्डपीठ का भोजशाला, धार के संबंध में निर्णय घोषित हो गया है। एक महिना होने को है। सर्वोच्च न्यायालय में मुस्लिम पक्ष की ओर से तीन एसएलपी प्रस्तुत हो चुकी है। किंतु हमारे समाज की ओर से इस संबंध में पहल करने की कोई हलचल दिखाई नहीं दे रही है। समाज के संगठनों के आदि तक जानकारी पहुंचाई गई है। किंतु परिणाम निराशाजनक है।

भारत का जैनधर्म प्राचीन है। इसके अनुयायी पूरे देश रहे हैं। पूरे देश में सैकड़ों स्थानों पर हमारे तीर्थंकर भगवंतों की खण्डित-अखण्डित प्राचीन मूर्तियां होने की जानकारियां आए दिन मालुम हो रही है। धार के आसपास और मालवा तथा जिला श्योपुर आदि स्थानों में ही यत्र-तत्र मौजूद है।

समाज के लिए सुझाव: भोजशाला, धार के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय में एसएलपी प्रस्तुत करने के लिये जैन समाज न्यायालयीन मामलों के लिए एक स्थाई राष्ट्रीय समिति गठित करें। जिसका मुख्यालय दिल्ली में हो। समिति के लिए पर्याप्त आर्थिक व्यवस्था रहे। समाज के जाने- माने वरिष्ठ एडवोकेट्स और सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति इसके सदस्य रहें। राजनैतिक और अन्य क्षेत्रों के विशेषज्ञों को भी रखा जाएं।

श्रुत पंचमी : ज्ञान, संस्कृति और परंपरा के सम्मान का दिव्य पर्व
प्राकृत भाषा की प्रतिष्ठा और श्रुत के संरक्षण का संकल्प दिवस

-डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

जैन परंपरा में अनेक पर्व ऐसे हैं जो आत्मशुद्धि, तप, आराधना और ज्ञान के जागरण से जुड़े हैं। इन्हीं में एक अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व है श्रुत पंचमी, जिसे ज्ञान पंचमी अथवा श्रुतपंचमी पर्व भी कहा जाता है। यह पर्व जेष्ठ शुक्ल पंचमी को मनाया जाता है और विशेष रूप से जैन आगमों (शास्त्रों) की वंदना एवं उनकी शुद्धता की भावना से जुड़ा है। यह पर्व जैन समाज में शास्त्रों की आराधना के रूप में अत्यंत श्रद्धा व समर्पण से मनाया जाता है।

श्रीमत्केवलीभाषितं जिनशासनमुत्तमम्।
श्रुतराजं नमस्यामि सर्वदु:ख विनाशकम्॥

श्रुत पंचमी का ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक महत्व : जैन परंपरा में आगम को भगवान महावीर की द्वादशांगवाणी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। श्रुत परंपरा जैन -धर्म -दर्शन में ही नहीं वैदिक परंपरा में भी चरमोत्कर्ष पर रही है। इसी के फलस्वरूप वेद को श्रुति के नाम से संबोधित किया जाता रहा। श्रुत पंचमी जैन धर्म का प्रमुख पर्व है।

पहले भगवान महावीर केवल उपदेश देते थे और उनके प्रमुख शिष्य (गणधर) उसे सभी को समझाते थे, क्योंकि तब महावीर की वाणी को लिखने की परंपरा नहीं थी। उसे सुनकर ही स्मरण किया जाता था इसीलिए उसका नाम 'श्रुत' था। एक कथा के अनुसार दो हजार वर्ष पहले जैन धर्म के एक प्रमुख संत धरसेनाचार्य को अचानक यह अनुभव हुआ की उनके द्वारा अर्जित जैन धर्म का ज्ञान केवल उनकी वाणी तक सीमित है। उन्होंने सोचा की शिष्यों की स्मरण शक्ति कम होने पर ज्ञान वाणी नहीं बचेगी। ऐसे में मेरे समाधि लेने से जैन धर्म का संपूर्ण ज्ञान खत्म हो जाएगा, तब धरसेनाचार्य ने पुष्पदंत एवं भूतबलि की सहायता से "षट्खण्डागम" की रचना की और उसे ज्येष्ठ शुक्ल की पंचमी को प्रस्तुत किया। देश की प्राचीन भाषा प्राकृत में लिखे इस शास्त्र में जैन धर्म से जुड़ी कई अहम जानकारियां हैं। इस ग्रंथ में जैन साहित्य, इतिहास, नियम आदि का वर्णन है जो किसी भी धर्म के लिए बेहद आवश्यक होते हैं।

भारत सरकार द्वारा प्राकृत भाषा शास्त्रीय भाषा घोषित : प्राकृत भाषा को हाल में भारत सरकार ने शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ने सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म 'एक्स' (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा-"हमारी सरकार भारत के समृद्ध इतिहास और संस्कृति का सम्मान करती है और क्षेत्रीय भाषाओं को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि कैबिनेट ने असमिया, बंगाली, मराठी, पाली और प्राकृत को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने का निर्णय लिया है। ये सभी सुंदर भाषाएं हैं, जो हमारी जीवंत विविधता को दर्शाती हैं। सभी को बधाई।"

भारतीय संस्कृति का अक्षय भंडार है जैन साहित्य : जैन परंपरा का साहित्य भारतीय संस्कृति का अक्षय भंडार है । जैन आचार्यों ने ज्ञान -विज्ञान की विविध विधाओं पर विपुल मात्रा में स्व- परोपकार की भावना से साहित्य का सृजन किया। आज भी अनेक शास्त्र भंडारों में हस्तलिखित प्राचीन ग्रंथ विद्यमान हैं ।जिनकी सुरक्षा, प्रचार-प्रसार, संपादन, अनुवाद निरंतर हो रहा है। प्राचीनकाल में मंदिरों में देव प्रतिमाओं को विराजमान करने में जितना श्रावक पुण्य लाभ मानते थे उतना ही शास्त्रों को ग्रंथ भंडार में विराजमान करने का भी मानते थे । यह श्रुत पंचमी महापर्व हमें जागरण की प्रेरणा देता है कि हम अपनी जिनवाणी रूपी अमूल्य निधि की सुरक्षा हेतु सजग हों तथा ज्ञान के आयतनों को प्राणवान स्वरूप प्रदान करें।

पांडुलिपियां हमारी अमूल्य धरोहर : जैन प्राचीन पांडुलिपियों में हमारी सभ्यता आचार-विचार और अध्यात्म विकास की कहानी समाहित है। उस अमूल्य धरोहर को हमारे पूर्वजनों ने अनुकूल सामग्री एवं वैज्ञानिक साधनों के अभाव में रात-दिन खून पसीना एक करके हमें विरासत में दिया है। इस पर्व पर संकल्प लें कि पांडुलिपियों का सूचीकरण करके व्यवस्थित रखवाया जाय, लेमिनेशन करके अथवा माइक्रोफिल्म तैयार करवा कर सैकड़ों हजारों वर्षों तक के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है और अप्रकाशित पांडुलिपियों को प्रकाशित किया जाए । मां जिनवाणी को संरक्षित करने, उसका हम संरक्षण और संवर्द्धन करने के लिए आगे आएं।

परुसा सक्कअ बंधा पाउअ बंधोवि होउ सुउमारो।
पुरुसमहिलाणं जेत्तिअमिहन्तरं तेत्तिअमि माणं ।।

श्रुत पंचमी की पूजा-पद्धति:

इस दिन विशेष रूप से जिनवाणी (शास्त्र) का पूजन किया जाता है। जिनवाणी को पालकी में बिठाकर शोभायात्रा निकाली जाती है। शास्त्र स्वाध्याय, सामायिक, प्रतिक्रमण और वाचन प्रमुख अनुष्ठान होते हैं।

श्रुत पंचमी और षट्खंडागम: श्रुत पंचमी पर विशेष रूप से षट्खंडागम की पूजा की जाती है क्योंकि यह ग्रंथ जैन आगम परंपरा का मूल स्तंभ है। षट्खंडागम और कषायपाहुड़ (कसायपाहुड़) को जैन धर्म का आधार माना जाता है।

श्रुत पंचमी और प्राकृत भाषा दिवस: श्रुत पंचमी और प्राकृत भाषा दिवस, दोनों ही भारतीय ज्ञान परंपरा विशेषकर जैन संस्कृति में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये पर्व न केवल शास्त्रों और ज्ञान के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हैं, बल्कि संस्कृति, भाषा और परंपरा की महत्ता को भी उजागर करते हैं। जैन समुदाय विशेष रूप से इस दिन को प्राकृत भाषा की महानता और उसके साहित्यिक योगदान की स्मृति में मनाता है।

यह दिन लोगों को अपनी मूल भाषाओं और संस्कृति से जुड़ने का संदेश देता है।श्रुत पंचमी और प्राकृत भाषा दिवस एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं, क्योंकि श्रुत का स्वरूप ही प्राकृत में रचित ग्रंथों के रूप में प्रकट हुआ। प्राकृत भाषा ने धर्म, दर्शन, आचार, तप, और मोक्ष जैसे विषयों को जन-जन तक पहुँचाया।

संरक्षण और संवर्धन : आज के युग में जहाँ पारंपरिक भाषाएँ और ग्रंथ विलुप्त होने के कगार पर हैं, ऐसे में श्रुत पंचमी और प्राकृत दिवस हमें धार्मिक-

सांस्कृतिक धरोहरों की रक्षा का संकल्प दिलाते हैं।

शिक्षा और शोध : विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में प्राकृत भाषा और जैन आगमों पर पुनः ध्यान केंद्रित हो रहा है। डिजिटलीकरण, अनुवाद, और शोध कार्यों के माध्यम से श्रुत और प्राकृत को पुनर्जीवित करने का प्रयास हो रहा है।

श्रुत पंचमी और प्राकृत भाषा दिवस केवल परंपरागत पर्व नहीं, बल्कि भारतीय बौद्धिक परंपरा के संरक्षण और संवर्धन का संदेश हैं। यह दिवस हमें स्मरण कराते हैं कि शब्दों में शक्ति होती है, और जब वे धर्म और ज्ञान के वाहक बनते हैं, तब वे मोक्षमार्ग के पथ प्रदर्शक बन जाते हैं।

श्रुत पंचमी का समकालीन संदर्भ में महत्व: आज जब भौतिकता और तर्कप्रधान युग में धर्मग्रंथों से दूर जाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, ऐसे में श्रुत पंचमी हमें धार्मिक ज्ञान, संस्कृति और आध्यात्मिक मूल्यों की पुनः स्थापना की प्रेरणा देती है। यह पर्व इस बात की याद दिलाता है कि—ग्रंथ केवल अध्ययन की वस्तु नहीं, बल्कि आचरण की भी प्रेरणा हैं।

ज्ञान की रक्षा केवल पुस्तकों को सहेजने से ही नहीं, बल्कि उनके अनुशीलन, मनन और प्रसार से होती है।

समकालीन सन्दर्भ में प्रासंगिकता : आज के सूचना और प्रौद्योगिकी युग में भी श्रुत ज्ञान का महत्व उतना ही है जितना प्राचीनकाल में। क्योंकि शास्त्र हमारे संस्कारों के स्रोत हैं। शास्त्र आचरण का दर्पण हैं। शास्त्र आत्मा को जागृत करते हैं।

श्रुत पंचमी केवल एक पर्व नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और परंपरा के सम्मान का उत्सव है। यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि जितना महत्वपूर्ण मुनियों का तप है, उतना ही महत्वपूर्ण है शास्त्रों का संरक्षण। शास्त्रों के बिना धर्म का आचरण संभव नहीं, और धर्म के बिना आत्मकल्याण नहीं।

अतः श्रुत पंचमी पर संकल्प लें कि हम शास्त्रों का पठन-पाठन करेंगे, बच्चों को इससे जोड़ेंगे, और ज्ञान के इस अमूल्य निधि को पीढ़ियों तक पहुँचाएंगे। यही इस पर्व की सच्ची आराधना है।

जिनवाणीं नमस्यामि जीवदया-विवर्धिनीम्।
मोक्षमार्गप्रदायिनीं धर्मज्ञानविवर्धिनीम्॥

श्रुत पंचमी पर्व हमें प्रेरणा देता है कि हम शास्त्रों की पूजा केवल प्रतीकात्मक न करें, बल्कि उन्हें समझें, पढ़ें और जीवन में उतारें।

आइए, इस श्रुत पंचमी पर हम सब मिलकर ज्ञान, भाषा और संस्कृति की रक्षा का संकल्प लें, और प्राकृत भाषा को उसकी प्रतिष्ठा पुनः प्रदान करें।

प्रबन्धक स्व. श्री उमानाथ जी दुबे की शोक सभा में विरार पहुँचे तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय पदाधिकारी, दी श्रद्धांजलि

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रबन्धक स्वर्गीय श्री उमानाथ जी दुबे की स्मृति में 10 जून को विरार (पश्चिम) स्थित श्री जलाराम बैंक्वेट हॉल में आयोजित शोक सभा में तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और उपस्थित सभी पदाधिकारियों ने विरार पहुंचकर उनके तैलचित्र पर पुष्प अर्पित कर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि दी। इसके साथ ही सभी पदाधिकारियों ने शोक संतप्त परिवार जनों से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात कर उनके प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त कीं और उन्हें ढांढस बंधाया।

इस अवसर पर स्वर्गीय श्री उमानाथ जी दुबे को श्रद्धांजलि अर्पित करने और उनके परिवार जनों से मिलने के लिए कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन, उपाध्यक्ष श्री संजय पापडीवाल, कोषाध्यक्ष श्री अशोक दोशी, मंत्री श्री हंसमुख जैन गांधी और शतकोत्तर रजत स्थापना महोत्सव के चेयरमेन श्री जवाहरलाल जैन, श्री विजय पापडीवाल उपस्थित रहे। इनके साथ ही श्री संजय पापडीवाल जी के भाई श्री विजय पापड़ीवाल भी शोक सभा में सम्मिलित हुए। इसके अलावा, केंद्रीय कार्यालय से श्री अमन मोदी और श्री गुंडप्पा खोत ने भी उपस्थित होकर पुण्यात्मा के प्रति अपने आदर सुमन अर्पित किए। ईश्वर पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में उत्तम स्थान प्रदान करें।

बाहरी दर्शनार्थियों के सहारे गिरनार जी की रक्षा नहीं हो सकती है-

इस बारे में - 22 साल पहले संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज का मार्गदर्शन

-निर्मलकुमार पाटोदी, इंदौर, पारस जैन बज-अध्यक्ष तीर्थक्षेत्र कमेटी गुजरात अंचल

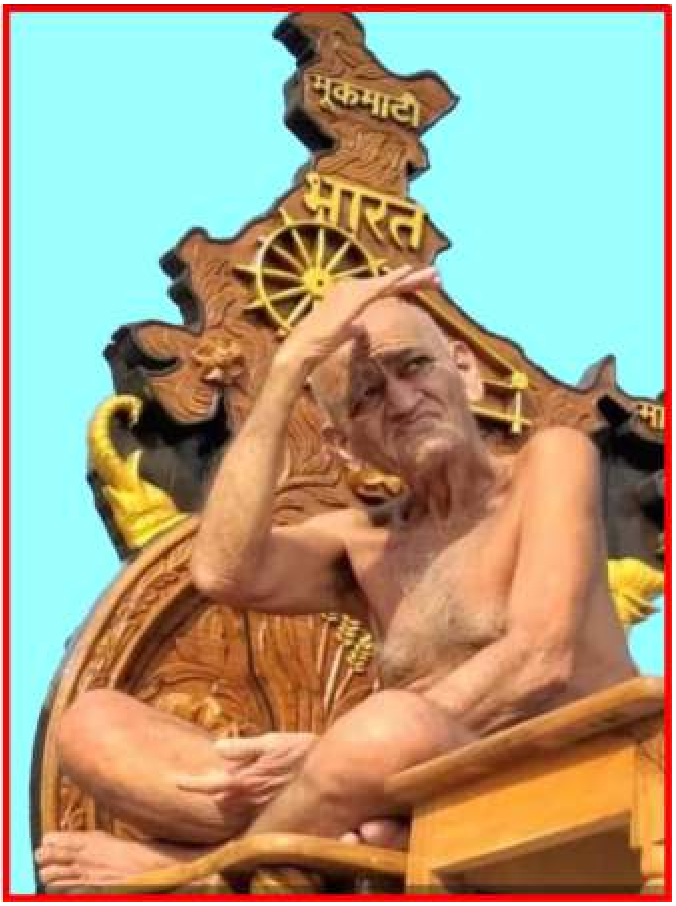

27 नवंबर 2004 के दिन भोपाल के पद्मश्री कैलाश मडवैया दयोदय तीर्थ (तिलवारा घाट में विकराजमान आचार्य श्री विद्यासागर जी गुरुदेव के दर्शनार्थ पहुंचे थे। वहां आपने पूज्य आचार्य श्री जी से गिरनार पहाड़ पर स्थित सम्पूर्ण चरण-चिह्न स्थली और सिद्धक्षेत्र से जुड़ी ज्वलंत समस्या की ओर मार्गदर्शन प्रदान करने का निवेदन किया था। कि अगर गिरनार जी में पूज्यश्री का एक चातुर्मास हो जाए तो सब ठीक हो सकता है। गिरनार जी की स्थिति बेकाबू हो रही है। इस पर आचार्यश्री ने कहा वहां कितने जैन नित्य पूजन करने जाते हैं ? वहां दिगंबर जैन परिवार कहां है ?" तब मडवैया ने कहा तलहटी स्थित जैन मंदिर में मात्र एक पूजारी है। प्रथम टोंक पर स्थित जैन मंदिर भी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। इस पर पूज्य श्री ने कहा- जब तक जैन परिवार वहां नहीं बसते और नियमित श्री चरणों के प्रक्षाल और पूजन की व्यवस्था नहीं होती, केवल बाहरी दर्शनार्थियों के आसरे तीर्थ रक्षा नहीं होने वाली।" पूज्य श्री ने आगे कहा-"यह सही है कि सदियों से गिरनार पर्वत पर भगवान नेमिनाथ के कल्याणक को मान्यता है, अधिपत्य है।" आचार्य महाराज ने पूछा- पर तीर्थक्षेत्र कमेटियां नित्य पूजन की व्यवस्था क्यों नहीं करती जिससे तीर्थ पर अधिकार बरकरार रहे और किसी अन्य की हिम्मत ही नहीं पड़ेगी

'जिनेन्द्र' के आजीवन सदस्य बनिये

बाहरी दर्शनार्थियों से सहारे गिरनारजी की रक्षा नहीं हो सकती

ऐसी स्थिति निर्मित करने की। **समाज को कोई जगाऐगा नहीं इसके लिए पहले हमें स्वयं जागना होगा:**

सर्वदा सत्य यह है कि गिरनार पर्वत पर हजारों साल से तीन कल्याणकों और पांचवीं टोंक पर पाषाण में उत्कीर्ण प्रभु नेमिनाथ जी के चरण-चिन्ह स्थापित होने से सदैव जैन धर्मावलंबियों का अधिपत्य रहा है। अनादि निधन तीर्थराज सम्मेदशिखर जी के बाद गिरनार जी सिद्धतीर्थ ही दूसरा सबसे बड़ा पूज्य और वंदनीय तीर्थ है। अल्पसंख्यक जैन धर्मावलंबियों की गिरनार जी में संख्या नगण्य है।इसका लाभ उठाते हुए बहूसंख्यकों ने हमारे महान तीर्थ पर अनधिकृत और अवैधानिक अधिपत्य जमा रखा है। गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा 17 फरवरी 2005 को प्रदत्त स्थगन आदेश भी प्रभावहीन और असफल सिद्ध हुआ है। गुजरात सरकार और प्रशासन के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग से गिरनार पर्वत पर स्थित हमारी प्राचीन टोंकों में कब्जा करके परिवर्तन कर दिया गया है। बहुत सारे नये-नये निर्माण कर दिये गये हैं। दर्शन और वंदना करने जाने वाले हमारे जैन यात्रियों को पूजा-जयकारा तो दूर, णमोकार महामंत्र तक बोलने नहीं दिया जा रहा है। अनेक बार यात्रियों और संतगणों पर हिंसक प्राणघातक हमलें किए गए हैं। दस हजार पेढ़ियां चढ़ने और उतरने वाले घायल निहत्थे द्वारा पुलिस को अपनी पीड़ा बताने पर भी पुलिस न मदद करती है, न कार्यवाही करती है और रिपोर्ट तक नहीं लिखती है। पहाड़ पर यात्री को गवाह नहीं मिल सकते हैं। इस कारण पुलिस बेफिक्र है। यात्री धार्मिक भावना से यात्रा करने जाता हैं। पुलिस और कोर्ट के चक्कर लगाना उसके लिए सम्भव नहीं होता है। इसी वजह से वहाँ अतिक्रमण करने वाले प्रेत्साहित हो रहे हैं। बहुसंख्यकों के हितों का ध्यान रखते हुए राज्य सरकार ने हमारी परंपरगत प्राचीन धार्मिक टोंकों तक के नाम शासकीय रेकॉर्ड में परिवर्तित कर दिये हैं।

शेष पृष्ठ 29 पर ......

महावीर पुरस्कार-25 से सम्मानित प्रो. अनुपम जैन, इन्दौर

जैन दर्शन के व्यवस्थित अध्ययन हेतु गणित का ज्ञान आवश्यक है। लोक रचना, कर्म सिद्धान्त या जैन न्याय के ग्रंथों का अध्ययन बिना गणित के संभव ही नहीं है। जैन आगमों, एवं उसकी टीकाओं में सहजता से विषयों के विवेचन में प्रयुक्त गणितीय सूत्रों एवं विश्लेषणों को ही **जैन गणित** कहा जाता है।

प्रशस्ति समर्पित करते हुए श्री सुधांशु कासलीवाल

पौराणिक ग्रंथों के आधार पर भगवान ऋषभदेव के काल से गणित का सूत्रपात हुआ था। उक्त विचार श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी-प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा जैन विद्या संस्थान, जयपुर के सभागार में दिनांक २८ मई २०२६ को आयोजित **महावीर पुरस्कार** समर्पण समारोह के अवसर पर देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के गणित के आचार्य एवं जैन गणित के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान प्रो. अनुपम जैन ने व्यक्त किये। आपने जैनाचार्यों की अनेक गणितीय उपलब्धियों की जानकारी दी एवं जैन गणित सम्बन्धित अप्रकाशित पाण्डुलिपियों के बारे में बताया।

क्षेत्र की प्रबन्धकारिणी कमेटी के अध्यक्ष वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सुधान्शु कासलीवाल ने बताया की यह पुरस्कार जैन धर्म, दर्शन, साहित्य, कला, भाषा आदि के क्षेत्र में विशेष कार्य करने वाले विद्वान को प्रदान किया जाता हैं। इसके मूल में भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्वपूर्ण स्रोत जैन अध्ययन - अनुसंधान को प्रोत्साहित करने की भावना निहित है। आपने सम्मान राशि एवं प्रशस्ति पत्र समर्पित किया।

जैन विद्या संस्थान समिति के संयोजक **प्रो. (डॉ.) कमलचन्द सोगाणी** ने जैनविद्या संस्थान की अकादमिक विकास-यात्रा को रेखांकित किया। उन्होंने उन भूले बिसरे पलों को याद किया जो इतिहास की धरोहर हैं। कमेटी के पूर्व अध्यक्ष श्री एन. के. सेठी एवं न्यायमूर्ति श्री जैन ने भी प्रो. जैन का सम्मान किया।

क्षेत्र के मानद् मंत्री श्री उमरावमल संधी ने महावीर पुरस्कार की उपलब्धि एवं पुरस्कृत कृति **जैन गणित** की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए डॉ. अनुपम जैन एवं आगन्तुक अतिथियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। खचाखच भरे सभागार में जयपुर नगर की अनेक विभूतियाँ तथा जैन विद्या संस्थान, प्राकृत भारती एवं राजस्थान विश्वविद्यालय के आचार्यगण तथा विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारीगण मौजूद थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन **प्रो. अनिल जैन** ने किया।

सम्मान करते श्री एन. के. सेठी (IAS)

डॉ. शकुन्तला जैन

परम आदरणीय गृहस्थाचार्य पंडित श्री मनोहर भाऊ आग्रेकर जी के देह-परिवर्तन पर श्रद्धांजलि

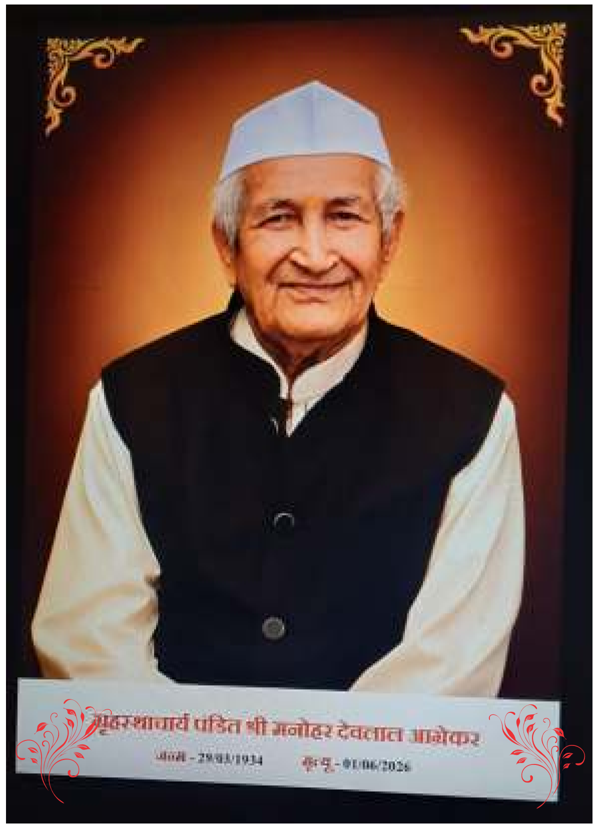

अनादि-अनंत जिनशासन की गौरवशाली आर्ष मार्ग परंपरा के प्रखर प्रवर्तक, धर्मप्रभावक, विद्वान ज्योतिषाचार्य एवं परम श्रद्धेय गृहस्थाचार्य पंडित श्री मनोहर भाऊ आग्रेकर जी का दिनांक 01 जून 2026 को देह-परिवर्तन हो गया।श्रद्धेय भाऊ ने अपना संपूर्ण जीवन धर्म, समाज एवं संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन तथा प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित कर दिया। आपने दशकों तक बालकों, युवाओं एवं श्रावक-श्राविकाओं को धार्मिक संस्कारों से अनुप्राणित किया। धार्मिक यात्राओं, भाद्रपद पर्व, रक्षाबंधन (राखी पूर्णिमा), पंचमेरु विधान तथा विविध धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से आपने जैन धर्म की गौरवशाली आर्ष परंपरा के संरक्षण एवं प्रसार में अविस्मरणीय योगदान प्रदान किया।लगभग छह दशकों तक निरंतर अध्ययन, स्वाध्याय, जिनागम-चिंतन एवं धर्मसेवा में रत रहकर आपने असंख्य जिज्ञासुओं को ज्ञानामृत का पान कराया। बच्चों की पाठशालाओं के माध्यम से आपने नई पीढ़ी में धर्म, संस्कार एवं सदाचार के बीज रोपे। पर्युषण पर्व के अवसर पर अनेक मंदिरों में प्रतिवर्ष निरंतर प्रवचन देकर आपने धर्मधारा को अविरल प्रवाहित रखा। अनेक साधु-संघों को शिक्षा, विधान एवं धार्मिक अनुष्ठानों में सहयोग प्रदान कर आपने जिनशासन की प्रभावना को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया।आप केवल एक प्रकांड ज्योतिषी ही नहीं, बल्कि धर्म और अध्यात्म के मर्मज्ञ व्याख्याता, कुशल संगठक तथा समाज के सच्चे पथ-प्रदर्शक थे। आपकी वाणी में ज्ञान की गंभीरता, आचरण में विनम्रता और व्यक्तित्व में आत्मीयता का अद्भुत समन्वय था। आपके ओजस्वी प्रवचनों ने असंख्य व्यक्तियों के जीवन में धर्म, संयम, सदाचार एवं आत्मकल्याण की ज्योति प्रज्वलित की।श्रद्धेय भाऊ का जीवन त्याग, तप, सेवा और समर्पण का जीवंत उदाहरण था। उन्होंने अपने आचरण से यह सिद्ध किया कि गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी धर्म की उच्चतम साधना एवं समाजसेवा का आदर्श स्थापित किया जा सकता है।

श्रद्धेय भाऊ अपने पीछे एक समृद्ध, संस्कारित एवं धर्मनिष्ठ पारिवारिक विरासत छोड़ गए हैं। उनके परिवार में धर्मपरायण धर्मपत्नी श्रीमती रत्नमाला भाभी, सुपुत्र श्री विलास, श्री देवेन्द्र, श्री चैतन्य एवं श्री राजेश, सुपुत्री सौ. शैलजा तथा विस्तृत पारिवारिक एवं सामाजिक परिवार है। श्रद्धेय भाऊ ने अपने परिवार को केवल सांसारिक उत्तरदायित्वों का ही नहीं, अपितु धर्म, संस्कार, सेवा एवं सदाचार का अमूल्य उत्तराधिकार भी प्रदान किया है। उनके द्वारा रोपित संस्कारों का यह विशाल वटवृक्ष आने वाली पीढ़ियों को भी धर्ममार्ग पर अग्रसर करता रहेगा।

उनका संपूर्ण जीवन जिनवाणी के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने का एक अखंड तपस्वी अभियान था। मंदिरों एवं धार्मिक संस्थानों में वर्षों से संचालित धार्मिक क्रियाओं, विधानों एवं आयोजनों की पवित्र परंपरा को अक्षुण्ण बनाए रखने में उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। धर्मप्रेमी समाज को संगठित करने, धार्मिक चेतना जागृत करने तथा संस्कारवान पीढ़ी निर्माण में उनकी भूमिका सदैव प्रेरणास्रोत बनी रहेगी।आपके देह-परिवर्तन से धर्मसमाज ने एक ऐसे दिव्य व्यक्तित्व को खो दिया है, जिसकी क्षति अपूरणीय है। आपके स्नेह, मार्गदर्शन, विद्वत्ता एवं धर्मनिष्ठ जीवन की स्मृतियाँ सदैव हम सभी के हृदयों में जीवंत रहेंगी। आपके विछोह से उत्पन्न हुई रिक्तता को भर पाना संभव नहीं है, किंतु आपके द्वारा प्रदर्शित धर्ममार्ग, आपके आदर्श एवं आपकी शिक्षाएँ युगों-युगों तक समाज का मार्गदर्शन करती रहेंगी। ऐसे परम पूज्य, धर्मनिष्ठ एवं प्रेरणास्रोत व्यक्तित्व को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु दिनांक 06 जून 2026 को एक गरिमामयी श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अनेक पूज्य आचार्य भगवंत, मुनिराज, गणिनी आर्यिका माताजी एवं अन्य संतजनों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए श्रद्धेय भाऊ के धर्ममय, तपमय एवं लोककल्याणकारी जीवन का स्मरण किया। आज भारत के विभिन्न राज्यों से, देश-विदेश में निवासरत असंख्य धर्मप्रेमियों, विद्वानों एवं समाजबंधुओं द्वारा उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित की जा रही हैं। यह उनके विराट व्यक्तित्व, निष्काम सेवा और धर्मसमर्पित जीवन का ही प्रतिफल है कि उनके प्रति श्रद्धा और सम्मान का यह प्रवाह निरंतर उमड़ रहा है। ईश्वर से नहीं, अपितु जिनेन्द्र प्रभु के चरणों में यही मंगल भावना है कि दिवंगत पुण्यात्मा की आत्मा अपने संचित पुण्यों के प्रभाव से उत्तरोत्तर आध्यात्मिक प्रगति के पथ पर अग्रसर होकर परम कल्याण का अधिकारी बने। श्रद्धेय भाऊ का धर्ममय जीवन, उनका त्याग, उनकी विद्वत्ता और उनका स्नेहिल व्यक्तित्व सदैव समाज के लिए प्रेरणा का अक्षय स्रोत बना रहेगा।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि एवं विनम्र नमन।

विनीत संतोष जैन पेंढ़ारी- महामंत्री, नागपुर

तीन संस्थाओं ने दिया संयुक्त ज्ञापन-
शेरगढ़ अभ्यारण्य के साथ पुरातत्व का भी हो संरक्षण

हाड़ौती के वन क्षेत्रों के संरक्षण के क्रम में वन विभाग द्वारा शेरगढ़ वन क्षेत्र को अभ्यारण्य घोषित कर विभिन्न संरक्षण योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इसी वन क्षेत्र में हजारों वर्ष पुराने शिलालेख, तीर्थंकर प्रतिमाएँ तथा अन्य महत्वपूर्ण पुरातात्विक अवशेष भी विद्यमान हैं, जिनका संरक्षण समान रूप से आवश्यक है।

इसी उद्देश्य को लेकर पुरातत्व संरक्षण के प्रति सजग अंतरराष्ट्रीय संस्था इंटेक (INTACH) कोटा चैप्टर, श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा तथा सकल दिगम्बर जैन समाज समिति, कोटा के संयुक्त प्रतिनिधिमंडल ने उपवन संरक्षक अनुराग कुमार भटनागर को ज्ञापन सौंपकर शेरगढ़ अभ्यारण्य क्षेत्र में स्थित पुरातात्विक धरोहरों के संरक्षण की मांग की।

ज्ञापन में बताया गया कि जैन अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी की भगवान आदिनाथ प्रतिमा का उद्गम भी इसी वन क्षेत्र से माना जाता है। क्षेत्र में प्राचीन शिलाओं पर उत्कीर्ण जैन प्रतिमाएँ आज भी विद्यमान हैं, जो इस बात का प्रमाण हैं कि प्राचीन काल में यहाँ जैन संस्कृति एवं मंदिरों का समृद्ध वैभव रहा होगा। कालांतर में हुई विनाशकारी घटनाओं के बावजूद अनेक पुरातात्विक अवशेष आज भी उस गौरवशाली इतिहास की गवाही दे रहे हैं।

प्रतिनिधिमंडल में इंटेक कोटा के कन्वीनर निखिलेश सेठी, एकता धारीवाल, पी.सी. जैन, डॉ आर.के. जैन, पीयूष मवासा, महासभा हाड़ौती संभाग के महामंत्री राकेश जैन 'चपलमन', पुरातत्व समन्वयक जे.के. जैन, सकल दिगम्बर जैन समाज समिति, कोटा के अध्यक्ष प्रकाश बज एवं कार्याध्यक्ष अनिल ठोरा सहित अन्य प्रतिनिधि उपस्थित रहे। सभी ने उपवन संरक्षक से शिष्टाचार भेंट कर क्षेत्र के ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व की जानकारी दी तथा संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया।

उपवन संरक्षक अनुराग कुमार भटनागर ने प्रतिनिधिमंडल की बात को गंभीरता से सुनते हुए आश्वस्त किया कि विभाग अभ्यारण्य क्षेत्र के संरक्षण के साथ-साथ वहाँ उपलब्ध पुरातात्विक धरोहरों के संरक्षण के प्रति भी प्रतिबद्ध है। उन्होंने यह भी कहा कि विभिन्न संस्थाओं एवं विशेषज्ञों द्वारा दिए गए सुझावों पर नियमानुसार विचार कर आवश्यक संरक्षणात्मक कदम उठाए जाएंगे।

प्रतिनिधियों ने आमजन एवं पुरातत्व प्रेमियों से भी आह्वान किया कि वे स्थल का अध्ययन कर अपने सुझाव विभाग को उपलब्ध कराएँ, ताकि प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत दोनों का समुचित संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके।

इन्दौर में मनाया आचार्य श्री शांतिसागर जी का 82वाँ समाधि दिवस

इंदौर। प्रशम मूर्ति आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी छांणी महाराज का 82वाँ समाधि दिवस इंदौर के कंचनबाग स्थित समोशरण मंदिर में श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक वातावरण के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य छत्तीसी विधान का आयोजन भक्तिभाव एवं मंगलमय वातावरण में संपन्न हुआ। मंदिर परिसर में धर्ममय वातावरण के बीच श्रद्धालुओं ने पूज्य आचार्य श्री के तप, त्याग एवं संयममय जीवन को स्मरण करते हुए भावपूर्ण विनयांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम में समाज के अनेक वरिष्ठ समाजसेवी, विभिन्न सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी, महिला मंडल एवं युवा मंडल के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। सभी ने आचार्य श्री के आदर्शों से प्रेरणा लेते हुए धर्म एवं संस्कारों के संरक्षण का संकल्प व्यक्त किया।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से श्री हसमुख गांधी, शरद पानोत, पवन बागड़िया, विकास जैन (बीड़ी), अर्पित जैन वाणी, श्रीमती रानी दोषी, रेणु गोधा, मधु पाटनी, डॉ. सुशीला सालगिया, रेखा दीदी, सरिता दीदी, शशि दीदी एवं निर्मला दीदी सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

- शरद पानोत, इंदौर

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई
द्वारा आयोजित
व्यावहारिक सुझाव/निबन्ध प्रतियोगिता

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आगामी शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कार्यक्रमों की श्रृंखला में 2 प्रतियोगिताऐं आयोजित की जा रही हैं।

- **युवा वर्ग (45 वर्ष से कम) - व्यावहारिक सुझाव प्रतियोगिता, विषयः- ''तीर्थों का विकास कैसे हो?''**
  शब्द सीमा - 1,000 शब्द
- **प्रौढ़ वर्ग (45 वर्ष से अधिक) - निबन्ध प्रतियोगिता, विषयः- 'तीर्थों के सम्मुख चुनौतियाँ एवं समाधान'**
  शब्द सीमा - 3,000 शब्द
- दोनों वर्गों के लिए पुरस्कार अलग अलग हैं।
- प्रविष्टि भेजने की अन्तिम तिथि **30.09.26** हैं।
- प्रविष्टि ए-4 आकार के कागज पर कम्प्यूटर कम्पोज कराकर अथवा सुवाच्य हस्तलिपि में भेजी जानी चाहिए। केवल बाहर के पृष्ठ पर नाम, पता, फोन नं. लिखें, अन्दर कहीं न लिखें।
- स्त्री - पुरूष का कोई भेद नहीं है। भारत का कोई भी नागरिक प्रविष्टि भेज सकता है।
- भाषा हिन्दी या अंग्रेजी में से किसी भी भाषा में मान्य है।
- आयु के प्रमाण स्वरूप आधार कार्ड की छाया प्रति साथ भेजें। अथवा कोई अन्य प्रमाणपत्र जिसमें जन्मतिथि अंकित हो। आयु की गणना 31 मार्च 2026 को की जायेगी।
- **पुरस्कार राशि** - दोनों वर्गों हेतु अलग-अलग

पुरस्कार राशि -	**प्रथम रु.**	:	**21,000.00**
दोनों वर्गों हेतु	**द्वितीय रु.**	:	**15,000.00**
अलग-अलग	**तृतीय रु.**	:	**11,000.00**

- **आवश्यकतानुसार सांत्वना पुरस्कार भी घोषित किये जा सकते हैं।**
- प्रविष्टि पंजीकृत डाक से भेजने का पता : -
  डॉ. अनुपम जैन,
  प्रधान सम्पादक - जैन तीर्थ वन्दना
  ज्ञानछाया, डी.14, सुदामा नगर
  इन्दौर 452009
  मोबा. 94250 53822, 95898 83822
- सभी विषयों में अध्यक्ष का निर्णय अन्तिम होगा।

जम्बूप्रसाद जैन
अध्यक्ष

संतोष जैन पेंढ़ारी
महामंत्री

जवाहरलाल जैन
चेयरमेन-शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कार्यक्रम समिति

आगामी 125वें स्थापना दिवस समारोह की तैयारियों को लेकर महत्वपूर्ण बैठक सम्पन्न

शनिवार, दिनांक 6 जून 2026 को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के कैम्प कार्यालय, गाज़ियाबाद में एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में कमेटी के आगामी शक्तकोत्तर रजत स्थापना वर्ष एवं 125वें स्थापना दिवस समारोह के भव्य आयोजन की रूपरेखा पर विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श किया गया।इस अवसर पर एम. एस. जैन मेरठ, मध्यांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री डी. के. जैन इंदौर, महामंत्री श्री राजकुमार घाटे इंदौर, शक्तकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कमेटी के मुख्य संयोजक श्री हसमुख गांधी इंदौर, दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री सुरेंद्र बाकलीवाल जी एवं कार्यालय प्रबंधक श्री दिगम्बर जैन महासमिति श्री राकेश शर्मा जी दिल्ली उपस्थित रहे।बैठक में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन, शक्तकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कमेटी के चेयरमैन श्री जवाहर लाल जैन तथा प्रचार मंत्री श्रीमती मीनू जैन के साथ आगामी 21 एवं 22 अक्टूबर 2026 को आयोजित होने वाले 125वें स्थापना दिवस समारोह के विभिन्न कार्यक्रमों, व्यवस्थाओं एवं आयोजन की रूपरेखा पर गहन चर्चा की गई।सभी पदाधिकारियों ने एकमत होकर इस ऐतिहासिक अवसर को श्रद्धा, गरिमा एवं भव्यता के साथ मनाने हेतु आवश्यक निर्णय लिए। बैठक में यह भावना व्यक्त की गई कि यह समारोह जैन समाज की गौरवशाली परंपराओं, तीर्थ संरक्षण की भावना और सेवा-संस्कारों को नई ऊर्जा प्रदान करने वाला महत्वपूर्ण अध्याय सिद्ध होगा।

अपने धर्म को जानना -समझना, इस की जड़ों से जुड़ना -आज की सबसे बड़ी आवश्यकता

- डॉ. अरिहंत कुमार जैन, मुंबई

आज के समय में एक गंभीर और चिंताजनक स्थिति हम सभी के सामने खड़ी है। अधिकांश जैनी अपनी ही धर्म की मूलभूत सामान्य ज्ञान या जानकारी से काफी हद तक अनभिज्ञ होते जा रहे हैं। महान ग्रंथों, उनके नामों, इनके लेखक आचार्यों के बारे में सामान्य जानकारी भी बहुत कम लोगों को है। जैन समाज में भी आगम, तीर्थंकरों के नाम, उनका जीवन परिचय , जैन धर्मके कुछ सिद्धांत, इतिहास जैसे महत्वपूर्ण विषय नई पीढ़ी के लिए बिलकुल अपरिचित बनते जा रहे हैं। अपने धर्म के मूल सिद्धांतों और इतिहास की जानकारी सीमित होती जा रही है। अधिकांश लोगों को केवल पर्वों की जानकारी होती है, वह भी इसलिए क्योंकि उन दिनों व्यापारिक संस्थान और सरकारी कार्यालय बंद रहते हैं। यदि अवकाश न हो, तो बहुत से लोग उन पर्वो से भी अनजान रह जाते हैं। यह स्थिति केवल जानकारी की कमी नहीं, बल्कि अपने मूल से धीरे-धीरे दूर होने का संकेत है।एक साक्षात्कार में एक मौलवी साहब ने यह बात कही कि इस्लाम धर्म को मानने वाला हर व्यक्ति कुरान की कुछ न कुछ आयतों और अन्य जानकारी से अवश्य परिचित होता है। और अपने धर्म के प्रति बहुत कट्टर होता है . किन्तु जैनी इतना कच्चा क्यों होता है? कि वह यहाँ वहां, सभी को मानने लगता है. इनके सामने वह इतना तक उदार हो जाता है कि वह मिथ्यात्व की ओर बढ़कर अपने धर्म को भी धीरे धीरे भुला कर, उसे मानना छोड़ देता है.यह बात हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम अपने धर्म के प्रति उतने ही सजग और जागरूक हैं? क्या हम अपनी आने वाली पीढ़ी या अपनी संतान को क्या हम अपने धर्म की मूल बातों और शिक्षाओं से जोड़ पा रहे हैं? वास्तव में, धर्म केवल पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की कला, नैतिकता और संस्कारों का आधार है। यदि हमारी नई पीढ़ी इनमूल्यों से अनभिज्ञ रह जाएगी, तो वे अपनी सांस्कृतिक 'पहचान'और धर्म को कैसे समझ पाएंगे? इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अपने घरों में, परिवारों में और समाज में धर्म की प्राथमिक जानकारी को सहज और सरल रूप में साझा करें।समझाये, पाठ शाला भेजे.हमें यह समझना होगा कि धर्म का ज्ञान किसी पर अहसान का विषय नहीं, बल्कि प्रेरणा और संवाद का विषय है। यदि हम स्वयं अपने ग्रंथों, परंपराओं और आदर्शों को जानेंगे और उन्हें जीवन में उतारेंगे , तो नई पीढ़ी स्वतः ही उससे जुड़ने लगेगी। छोटे-छोटे प्रयास जैसे प्रतिदिन एक, श्लोक, प्राकृत आगमों की एक गाथा या उनका मंगलाचरण, कोई एक प्रेरक कथा या एक प्रसंग साझा करना,उन्हें बताए तब बच्चों के मन में गहरी छाप छोड़ सकता है।आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने व्यस्त जीवन में से थोड़ा समय निकालकर आत्मचिंतन करें और यह विचार करें कि कहीं हमअपने धर्म को भूलते तो नहीं जा रहे हैं?ऐसे में हमारा यह सबसे उत्कृष्ट और करोड़ों वर्षों से चला आ रहा धर्म आगे कैसे चलेगा?सोचो हम अपने धर्म और संस्कृति के संरक्षण में क्या योगदान दे रहे हैं। यदि हर व्यक्ति हर परिवार यह संकल्प ले कि वह अपने बच्चों को अपने धर्म की मूल बातें अवश्य सिखाएगा, तो यह एक बड़ा सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। धर्म की जड़ों से जुड़ना केवल परंपरा निभाना नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व को समझना है। आइए, हम सभी इस दिशा में एक छोटा लेकिन सार्थक कदम उठाएं और अपनी आने वाली पीढ़ी को ज्ञान, संस्कार और पहचान की अमूल्य धरोहर सौंपें।

जनगणना में जैन जागरण का नया सूत्र : हर मंदिर बने सहायता केंद्र, हर परिवार स्वयं लिखे अपनी पहचान

- डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

राष्ट्र की शक्ति केवल उसकी सीमाओं, संसाधनों और व्यवस्थाओं में नहीं, बल्कि उसके नागरिकों की सजग भागीदारी में निहित होती है। जनगणना इसी सजगता का राष्ट्रीय पर्व है। यह केवल जनसंख्या की गणना नहीं, बल्कि समाज की उपस्थिति, पहचान, परंपरा, भाषा, शिक्षा, आर्थिक स्थिति और सांस्कृतिक स्वरूप का आधिकारिक दस्तावेज है।

जो समाज जनगणना में सही रूप से दर्ज होता है, वही नीति-निर्माण में स्पष्ट दिखाई देता है। जो समाज उदासीन रहता है, उसकी वास्तविक उपस्थिति अनेक बार आँकड़ों में धुंधली हो जाती है। इसलिए जैन समाज के लिए यह समय अत्यंत महत्वपूर्ण है कि वह अपनी पहचान स्वयं प्रमाणिक रूप से दर्ज कराए।

आज तकनीकी युग में जब जनगणना की प्रक्रिया ऑनलाइन और डिजिटल स्वरूप ले रही है, तब जैन समाज के लिए यह एक स्वर्णिम अवसर है कि वह संगठित होकर प्रत्येक गाँव, कस्बे, नगर और महानगर में निःशुल्क जनगणना सहायता केंद्र स्थापित करे, जहाँ समाज का प्रत्येक परिवार जाकर अपनी सही जानकारी स्वयं भर सके।

हर मंदिर बने समाज जागरण का आधुनिक केंद्र

जैन मंदिर केवल पूजा-अर्चना के स्थल नहीं, बल्कि धर्म, संस्कृति, अनुशासन, ज्ञान और समाज-संगठन के प्रेरणास्थल रहे हैं। आज समय की पुकार है कि मंदिरों को समाजोपयोगी सेवाओं से जोड़ा जाए।

यदि प्रत्येक जैन मंदिर में एक कक्ष, एक मेज, एक कंप्यूटर, इंटरनेट सुविधा और प्रशिक्षित स्वयंसेवक उपलब्ध हों, तो मंदिर जनगणना जागरूकता के केंद्र बन सकते हैं। वहाँ परिवार सहजता से पहुँचेंगे, विश्वास के साथ जानकारी देंगे और अपनी सही पहचान अंकित कर सकेंगे।

यह व्यवस्था समाज को संगठित भी करेगी और सेवा की नई दिशा भी देगी।

स्वयं जानकारी भरना क्यों आवश्यक है?

अनेक बार सामान्य प्रक्रिया में जानकारी अपूर्ण, अनुमानित या गलत दर्ज हो जाती है। धर्म, भाषा, शिक्षा, व्यवसाय, परिवार संरचना जैसी सूचनाएँ यदि सावधानी से न भरी जाएँ, तो समाज की वास्तविक स्थिति प्रभावित होती है।

जब व्यक्ति स्वयं अपनी जानकारी भरता है, तब वह सजगता के साथ अपनी पहचान दर्ज करता है। विशेष रूप से जैन समाज के लिए यह आवश्यक है कि धर्म के कॉलम में 'जैन' तथा भाषा के कॉलम में 'प्राकृत' जैसे मूल सांस्कृतिक तत्व स्पष्ट रूप से अंकित हों। यह केवल तकनीकी प्रविष्टि नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए ऐतिहासिक दस्तावेज तैयार करना है।

जनगणना और भविष्य की दिशा : सरकारी योजनाएँ, सामाजिक अध्ययन, अल्पसंख्यक नीतियाँ, सांस्कृतिक संरक्षण, शैक्षिक योजनाएँ और प्रशासनिक निर्णय प्रायः जनगणना आँकड़ों पर आधारित होते हैं। यदि समाज की संख्या और पहचान स्पष्ट रूप से सामने आती है, तो उसकी आवश्यकताओं को भी गंभीरता से देखा जाता है।

इसलिए जनगणना में सक्रिय भागीदारी समाज के भविष्य से जुड़ा विषय है।

कैसी बने संगठनात्मक कार्ययोजना?

1. हर शहर में जनगणना संयोजन समिति बने स्थानीय जैन संस्थाएँ, पंचायतें, ट्रस्ट और युवा संगठन मिलकर समिति बनाएँ।
2. मंदिर आधारित सहायता केंद्र स्थापित हों जहाँ कंप्यूटर, इंटरनेट और स्वयंसेवक उपलब्ध हों।
3. डिजिटल स्वयंसेवक दल तैयार हो तकनीकी जानकारी रखने वाले युवाओं को प्रशिक्षित किया जाए।
4. घर-घर सूचना अभियान चले पर्चे, पोस्टर, संदेश, सभाएँ और व्यक्तिगत संपर्क के माध्यम से।
5. वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष सेवा जो लोग स्वयं केंद्र न पहुँच सकें, उनके लिए घर जाकर सहायता दी जाए।
6. महिलाओं और युवतियों की भागीदारी बढ़े परिवार की सही जानकारी संकलन में उनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण हो सकती है।
7. सत्यापित सूचना ही प्रसारित हो सोशल मीडिया पर अपुष्ट तिथि, फॉर्म या संदेशों से बचा जाए।

मंदिरों से सेवा का नया अध्याय : जब मंदिर समाज की आवश्यकताओं से जुड़ते हैं, तब धर्म जीवंत बनता है। आज की सेवा केवल दान तक सीमित नहीं, बल्कि मार्गदर्शन, डिजिटल सहयोग, जागरूकता और संगठन निर्माण तक विस्तृत हो चुकी है।

यदि जैन मंदिर जनगणना सहायता केंद्र बनते हैं, तो यह धर्म और समाज सेवा का अत्यंत प्रेरक उदाहरण होगा।

जैन समाज के लिए ऐतिहासिक अवसर :

आज आवश्यकता केवल चर्चा की नहीं, बल्कि क्रियान्वयन की है। यदि देशभर में हजारों जैन मंदिर, धर्मशालाएँ, पंचायतें और संस्थाएँ एक साथ

शेष पृष्ठ 27 पर ......

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने पूर्व महामंत्री श्री अरविन्द राव जी दोशी से की शिष्टाचार भेंट

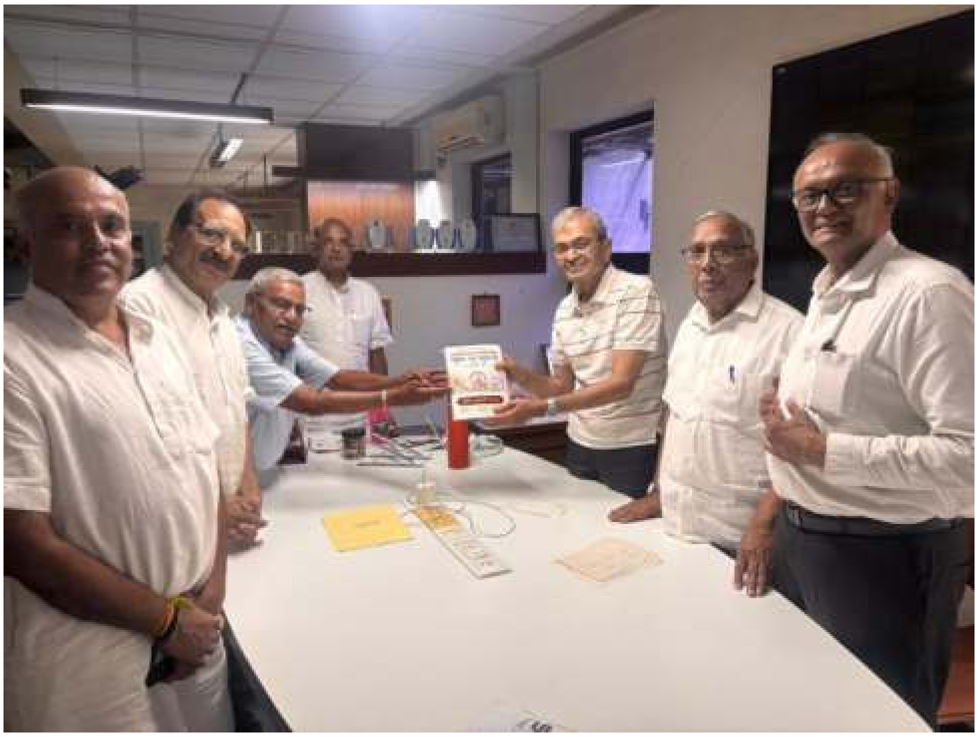

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के गौरवशाली 125 वें स्थापना वर्ष (शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष) के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने अतीत के मजबूत स्तंभों से मार्गदर्शन लेने की सराहनीय पहल की, इसी कड़ी में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन, उपाध्यक्ष श्री संजय पापडीवाल, कोषाध्यक्ष श्री अशोक दोशी, मंत्री श्री हंसमुख जैन गांधी और शतकोत्तर रजत स्थापना महोत्सव समिति के चेयरमैन श्री जवाहरलाल जैन, श्री विजय पापडीवाल ने कमेटी के पूर्व महामंत्री **श्री अरविन्द राव जी दोशी** के कार्यालय पर जाकर उनसे आत्मीय शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान वर्तमान नेतृत्व ने संयुक्त रूप से उन्हें आगामी **21-22 अक्टूबर को मथुरा में आयोजित होने वाले भव्य 'शतकोत्तर रजत महोत्सव'** की आधिकारिक निमंत्रण पत्रिका ससम्मान भेंट की और इस ऐतिहासिक राष्ट्रीय समागम में सम्मिलित होने के लिए भावभीना आमंत्रण दिया।

गौरतलब है कि श्री अरविन्द राव जी दोशी ने करीब **१८ वर्षों तक** तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री पद का गुरुतर दायित्व अत्यंत निष्ठा और कुशलता के साथ संभाला था। इस आत्मीय मुलाकात के दौरान वर्तमान पदाधिकारियों और श्री अरविन्द राव जी के बीच कमेटी के इतिहास पर विस्तृत चर्चा हुई, जिसमें उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान तीर्थों की सुरक्षा, अदालती मामलों और विषम परिस्थितियों में सामने आई प्रशासनिक व सामाजिक चुनौतियों के संस्मरण साझा किए। साथ ही, उन्होंने अपने समय की ऐतिहासिक सफलताओं, प्राचीन तीर्थों के पुनरुद्धार के अनुभवों और वर्तमान समय में जैन संस्कृति व विवादित तीर्थों की रक्षा के लिए भावी रोडमैप पर गहरा प्रकाश डाला। वर्तमान राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने श्री अरविन्द राव जी दोशी के दीर्घायु व उत्तम स्वास्थ्य की मंगल कामना करते हुए उनके अमूल्य अनुभवों और मार्गदर्शन के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त की।

पृष्ठ 26 से शेष ......

इस दिशा में सक्रिय हो जाएँ, तो जनगणना में जैन समाज की वास्तविक संख्या, सांस्कृतिक स्वरूप और सामाजिक उपस्थिति पहले से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से सामने आ सकती है।

यह अवसर बार-बार नहीं आता। जनगणना के बाद वर्षों तक वही आँकड़े राष्ट्रीय आधार बनते हैं। इसलिए यह समय सजगता, संगठन और संकल्प का है।

एक प्रेरक संकल्प, आइए निश्चय करें—

हर मंदिर बने सहायता केंद्र

हर समिति बने मार्गदर्शक

हर युवा बने स्वयंसेवक

हर परिवार स्वयं भरे सही जानकारी

हर जैन अपनी पहचान जागरूकता से दर्ज कराए

आह्वान : समाज की पहचान दूसरों से नहीं लिखवाई जाती, उसे समाज स्वयं लिखता है। इतिहास उन्हीं का साक्षी बनता है, जो समय की पुकार को पहचानते हैं।जनगणना का यह अवसर केवल गणना का अवसर नहीं, बल्कि जैन जागरण, संगठन और अस्मिता के नवयुग का द्वार है।

अब समय आ गया है—हर परिवार जागे, हर मंदिर समिति आगे आए, हर जैन स्वयं अपनी पहचान लिखे।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के गौरवशाली 125 वर्ष: मुंबई के गुलालवाड़ी मंदिर में जन सामूहिक बैठक संपन्न

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के गौरवशाली 125वें स्थापना वर्ष (शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष) के पावन अवसर पर समाज में जन जागृति लाने के उद्देश्य से मुंबई के ऐतिहासिक गुलालवाड़ी दिगम्बर जैन मंदिर में एक विशेष जन सामूहिक बैठक का आयोजन किया गया।

इस महत्वपूर्ण बैठक में कमेटी के शीर्ष राष्ट्रीय पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिसमें मुख्य रूप से **श्री जम्बूप्रसाद जैन** (राष्ट्रीय अध्यक्ष), **श्री संजय पापडीवाल** (उपाध्यक्ष), **श्री अशोक दोशी** (कोषाध्यक्ष), **श्री हंसमुख गांधी** (मंत्री), **श्री जवाहरलाल जैन** (चेयरमैन, शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष समिति) राष्ट्रीय नेतृत्व के साथ-साथ स्थानीय जैन समाज के प्रबुद्ध नागरिक, वरिष्ठ समाजसेवी उपस्थित रहे। बैठक के दौरान तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण, संवर्धन और आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा पर गंभीर चर्चा की गई। इस ऐतिहासिक बैठक में देश भर से पधारे कमेटी के शीर्ष राष्ट्रीय पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। स्थानीय जैन समाज और गुलालवाड़ी मंदिर समिति द्वारा राष्ट्रीय नेतृत्व का अत्यंत आदरपूर्वक एवं भावभीना स्वागत-सम्मान (बहुमान) किया गया।

गुलालवाड़ी मंदिर में आयोजित इस ऐतिहासिक बैठक में मुख्य वक्ताओं ने तीर्थों और समाज के भविष्य को लेकर कई महत्वपूर्ण मुद्दे उठाए। बैठक में श्री सुनील जी एवं श्री रमेश जी ने तकनीकी सशक्तिकरण पर जोर देते हुए कमेटी का अपना डिजिटल चैनल, समर्पित आईटी विभाग और 'घर बैठे मोबाइल तीर्थ वंदना' शुरू करने का ठोस प्रस्ताव रखा। वहीं श्री संजय राजा ने चिंता व्यक्त की कि पिछले 20-25 वर्षों में सामाजिक प्रभाव कुछ कम हुआ है, जिसे पुनर्जीवित करने के लिए मुंबई की एक कमेटी बनाने और हर स्थानीय मंदिर में कार्यक्रम आयोजित करने की महती जरूरत है, साथ ही उन्होंने तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा रखवाई जा रही गोलक योजना की प्रशंसा की एवं श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर भुलेश्वर मंदिर से स्वीकृति प्रदान कर गोलक रखवाने का आश्वासन दिया। श्रीमान एडवोकेट अजीत भाई शाह ने सोशल मीडिया (इन्स्टाग्राम) पर सक्रिय युवाओं को इस मुहिम से जोड़ने और जैन समाज की जनसंख्या के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने की बात कही, विशेष रूप से, शतकोत्तर रजत स्थापना महोत्सव समिति के चेयरमैन **श्री जवाहरलाल जी जैन** ने कमेटी के गौरवशाली 125 वर्षों के समृद्ध इतिहास पर प्रकाश डाला। उन्होंने आगामी **21-22 अक्टूबर को मथुरा में आयोजित होने वाले भव्य 'शतकोत्तर रजत महोत्सव'** की विस्तृत जानकारी साझा करते

हुए मुंबई जैन समाज के सभी प्रबुद्ध जनों को इस ऐतिहासिक राष्ट्रीय आयोजन में सम्मिलित होने के लिए भावभीना आमंत्रण दिया; अंत में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद ने जैन संस्कृति व विवादित तीर्थों की रक्षा, राष्ट्रीय जनगणना में सभी को अनिवार्य रूप से 'जैन' लिखने और कमेटी में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने पर विशेष बल दिया।

7 महानुभावों ने दी "तीर्थचक्रवर्ती" सदस्यता की स्वीकृति

तीर्थों के संरक्षण और विकास में अपना महती योगदान देने के लिए मुंबई के निम्नलिखित 7 श्रेष्ठियों ने सहर्ष "तीर्थचक्रवर्ती" पद की स्वीकृति प्रदान की, जिनका राष्ट्रीय कमेटी द्वारा भव्य अभिनंदन किया गया:

1. **श्री पंकज देवीलालजी भोरावत**
2. **श्री अभय हीरालाल शाह**
3. **श्री पंकज चंदुलाल दोषी**
4. **श्री तेजपाल इन्दरमलजी वणावत**
5. **श्री सन्मतीकुमार मोतीलाल दोटिया**

6. **श्रीमती पुजा पारस महेता**
7. **कु. प्रविणाबेन वखारिया**

शीर्ष पदाधिकारियों के अतिरिक्त बैठक में मुख्य रूप से **श्री** रमेश एम. कोटाडिया, **श्री** सुनील पी. शाह, **श्री** जयेश बी. शाह, **श्री** एडवोकेट अजीत जे. शाह, **श्री** पंकज सी. दोषी, **श्री** संजय राजा, **श्री** पंकज डी. दोषी, **श्री** अभय हीरालाल दोषी, **श्री** सुरेश दयाचंद जैन, **श्री** शैलेंद्र सिंघई, **श्री** भारत जैन (गुलालवाड़ी) और **श्री** रमेश सी. जैन सहित समाज के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। बैठक के अंत में सभी उपस्थित जनों ने 125वें वर्ष को ऐतिहासिक बनाने और जैन संस्कृति व तीर्थों की रक्षा के लिए अपनी कटिबद्धता दोहराई।

पृष्ठ 20 से शेष ......

गिरनार पहाड़ पर जैनियों का अस्तित्व मिटाया जा रहा है। कहा जा रहा है कि गिरनार पहाड़ पर जैनियों का कुछ भी नहीं है। जैन यात्री हमारे पहाड़ पर क्यों आते हैं आदि आदि। **समस्त जैन समाज की भावना है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी गिरनार में बसाहट करके, शतकोत्तर वर्ष को यादगार बना दें:**

गिरनार सिद्धक्षेत्र के संबंध में आचार्य श्री विद्यासागर जी के अंतर्मन में तो गहरी वेदना थी ही।आचार्य श्री के अलावा हमारे सभी साधु भगवंतो का भी बारम्बार यही आग्रह रहता है कि गिरनार जी पर्वत का स्थाई समाधान एवं सुरक्षित करने के लिए आचार्य श्री विद्यासागर जी के द्वारा प्रदान किये गये मार्गदर्शन को साकार करने का स्वर्णिम अवसर आ गया है। तीर्थक्षेत्र कमेटी के द्वारा शतकोत्तर वर्ष मनाने के लिए अनेक आयोजन किये जाने वाले हैं। शतकोत्तर वर्ष को यादगार बनाने के लिए गिरनार तीर्थ को स्थाई रूप से सुरक्षा प्रदान करने का संकल्प प्रस्तावित है। प्रस्ताव के अनुसार गिरनार तीर्थक्षेत्र में समाज के पचास परिवारों को बसाया जाने की योजना है जिसके लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी को सिर्फ भूमि खरीदने हेतु सहयोग प्रदान करना अथवा कराना होगा। इसके बाद की व्यवस्था के लिए गुजरात अंचल इस योजना को अंतिम रूप देने को तैयार है। जिसमें जमीन खरीदने से लेकर, समाज के परिवारों के रहने हेतु निवास बनाने उन्हें रोजगार देकर आत्मनिर्भर करने की योजना को साकार करने के लिए तैयार है। पिछले वर्ष 2025 में विश्व जैन संगठन दिल्ली की ओर से भगवान नेमिनाथ जी के निर्वाण कल्याणक के दिन राष्ट्रीय गिरनार यात्रा दिल्ली से गिरनार जी तक आयोजित की गई थी। उस यात्रा में देश भर से समाज के पच्चीस हजार से ज्यादा श्रद्धालु-श्रावक गिरनार जी पहुंचे थे जिनकी रहने एवं भोजन की व्यवस्था तीर्थक्षेत्र कमेटी के द्वारा की गई थी। इस वर्ष के लिए भी संगठन गिरनार यात्रा आयोजित करने जा रहा है। यह समाज को जाग्रत करने तक तो सराहनीय और अनुकरणीय प्रयास है। अब आवश्यकता पहले चरण में यदि समाज के श्रद्धलु गिरनार जी में स्थाई रूप से बस जाते हैं, तो गिरनार की यात्रा पर आने वाले यात्रियों की सुरक्षा के लिए मजबूत कवच तैयार हो जाएगा।मुझे उम्मीद है कि इस महान कार्य में निश्चित ही हमारे समाज और हमारे पूज्यनीय संतगणों का पूरा आशीर्वाद भी साथ में रहेगा।

गौरवशाली परंपरा का सम्मान:
पूर्व अध्यक्ष श्री आर. के. जैन और श्री प्रभातचन्द्र सवाईलाल जी को दिया गया मथुरा महामहोत्सव का आमंत्रण

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के गौरवशाली 125वें स्थापना वर्ष के उपलक्ष्य में मुंबई प्रवास पर आए राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने अतीत के वरिष्ठ नेतृत्व से मार्गदर्शन और संपर्क की इसी श्रृंखला में कमेटी के पूर्व अध्यक्ष श्री आर. के. जैन से आत्मीय शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन, कोषाध्यक्ष श्री अशोक दोशी, मंत्री श्री हंसमुख जैन गांधी और शतकोत्तर रजत स्थापना महोत्सव समिति के चेयरमैन श्री जवाहरलाल जैन ने संयुक्त रूप से उन्हें आगामी 21-22 अक्टूबर को मथुरा में आयोजित होने वाले भव्य 'शतकोत्तर रजत महोत्सव' की आधिकारिक निमंत्रण पत्रिका ससम्मान भेंट की और इस ऐतिहासिक राष्ट्रीय समागम में सम्मिलित होने के लिए भावभीना आमंत्रण दिया।

इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय नेतृत्व ने कमेटी के एक और वरिष्ठ स्तंभ एवं पूर्व अध्यक्ष श्री प्रभातचन्द्र सवाईलाल जी से भी शिष्टाचार भेंट की। पदाधिकारियों ने उन्हें भी महोत्सव की निमंत्रण पत्रिका ससम्मान सुपुर्द की और मथुरा महामहोत्सव के लिए सादर आमंत्रित किया। वर्तमान राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने दोनों पूर्व अध्यक्षों के दीर्घायु व उत्तम स्वास्थ्य की मंगल कामना करते हुए उनके अमूल्य अनुभवों और निरंतर मिल रहे मार्गदर्शन के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त की।

रीवा में दर्दनाक सड़क हादसा: जैन समाज की दो आर्यिका माताजी की असमय समाधि, देशभर में शोक

पिछले दिनों मध्य प्रदेश के रीवा में विहार के दौरान एक अनियंत्रित कार की टक्कर से संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की दो शिष्याओं आर्यिका श्रुतमति माताजी एवं आर्यिका उपशममति माताजी की असमय समाधि हो गई थी। इस हृदयविदारक हादसे के बाद आरोपी कार चालक को जबलपुर के पास से गिरफ्तार कर लिया गया था, लेकिन इस घटना ने संपूर्ण जैन समाज को झकझोर कर रख दिया।

इस दर्दनाक हादसे के विरोध में और साधु-संतों के सुरक्षित विहार की मांग को लेकर मध्यप्रदेश के कई छोटे बड़े शहरों में ऐतिहासिक आंदोलन भी हुए। दिगंबर और श्वेतांबर समाज ने पंथवाद से ऊपर उठकर एक सुर में देशव्यापी मौन जुलूस निकाले। इंदौर, विदिशा, सागर, भोपाल सहित सैकड़ों शहरों में जैन समाज के हजारों पुरुषों ने सफेद और महिलाओं ने केसरिया वस्त्र पहनकर विशाल मौनरैली निकाली। समाज की विभिन्न संस्थाओं और महासंघों द्वारा राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री और स्थानीय प्रशासन को ज्ञापन सौंपकर राष्ट्रीय स्तर पर 'संत सुरक्षा कानून' बनाने, विहार मार्गों पर विशेष सुरक्षा बल तैनात करने और यातायात नियंत्रण की पुख्ता व्यवस्था करने की पुरजोर मांग की गई। 'तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार पूज्य माताजी द्वय के चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए शासन-प्रशासन से संतों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का पुरज़ोर आग्रह करता है।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी
धर्म चिह्न
मानस्तंभ
125 वर्ष - आस्था और संरक्षण का महापर्व!
22 अक्टूबर 2026 को 'भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' अपने गौरवशाली सवा सौ साल पूर्ण कर रही है। सवा सौ साल पहले हमारे पावन तीर्थों पर अव्यवस्था का साम्राज्य था और मंदिरों में पूजा-प्रक्षाल की भी उचित व्यवस्था नहीं थी।
दानवीर सेठ माणिकचंद जी जैसे महापुरुषों की दूरदर्शिता ने 'तीर्थरक्षा' का जो दीप जलाया, आज उसी से हमारी संस्कृति सुरक्षित है। तीर्थों की वंदना ही 'जीवन-साफल्य' का मूलमंत्र है। सम्मेद शिखर जी जैसे पवित्र क्षेत्रों का संरक्षण हमारी विरासत बचाने के लिए अनिवार्य है।
आइए, इस ऐतिहासिक अवसर पर हम सब अपने तीर्थों की सुरक्षा और गरिमा बनाए रखने का संकल्प लें!
125 वर्ष
22 अक्टूबर 2026 - 22 अक्टूबर 2027
जम्बू प्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
संतोष पेंढारी
राष्ट्रीय महामंत्री
जवाहर लाल जैन
चेयरमैन (शतकोत्तर रजत वर्ष)
22 अक्टूबर, मथुरा चलो
22 OCTOBER 2026
22 OCTOBER 2026

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2025-27
Jain Tirth vandana, English-Hindi June 2026
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2025-27
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GUJARAT FLUOROCHEMICALS
VALUE THROUGH GREEN CHEMISTRY

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOXGFL GROUP
BEYOND INFINITY

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printer, Publisher and Editor UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004. Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 Dadarkar Building, V P Road, C P Tank, MUMBAI-400 004 . Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004.